हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 20 अप्रैल 2025

11 शिविर में 60 लोगों ने किया रक्तदान

12 बहादुरगढ़ में सुधरेगी बिजली आपूर्ति

SANSKARAM GROUP OF SCHOOLS, JHAJJAR
India's Most Trusted School for Integrated Classroom Programme
IIT-JEE | NEET | NDA | MNS | CLAT
CA-CS | CUET | SSC | VVM | VSSF
संस्कारम पब्लिक स्कूल से लेकर संस्कारम यूनिवर्सिटी तक –के.जी. से पी.एच.डी. तक की सम्पूर्ण शिक्षा !
BOARD Results 2024
2025-26 ADMISSION OPEN
CBSE CLASS XII Topper 99% RITIKA D/o DEVENDER JHAJJAR
CBSE CLASS X Topper 98.2% KANIKA D/o BALWAN KHERI KHUMMAR
CBSE CLASS X Topper 98.2% CHIRAG S/o RAMBIR CHIMNI
JHAJJAR CAMPUS : NH.334B, Main Dadri Road, Khatiwas, Jhajjar, 8222889860, 8222889862 | PATAUDA CAMPUS : NH. 352, Patauda, Near Kulana, Jhajjar , 9053007801, 9053007802

खबर संक्षेप

जिला कारागार में 25 से लगेगा जांच शिविर

झज्जर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में आगामी 25 और 28 अप्रैल को सुबह साढ़े नौ बजे जिला कारागार में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। सीजेएम एवं जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सचिव विशाल ने बताया कि 25 अप्रैल को आयुष विभाग और 28 अप्रैल को स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा बंदियों के स्वास्थ्य की निःशुल्क जांच की जाएगी।

जाखोदा में लीगल सर्विस कैंप 28 को

झज्जर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जाखोदा गांव में आगामी 28 अप्रैल को सुबह नो बजे लीगल सर्विस कैंप का आयोजन किया जाएगा। सीजेएम एवं जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सचिव विशाल ने बताया कि गांव जाखोदा में लीगल सर्विस कैंप में परिवार पहचान पत्र, आधार कार्ड, वोटर कार्ड, राशन कार्ड, बिजली, रेवेन्यू, पानी, पेंशन आदि मामलों का समाधान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि आस-पास गांव के लोग भी इस कैंप का लाभ ले सकते हैं। कैंप में कई विषयों पर जानकारी दी जाएगी।

दिनभर सुलगते रहे खेत, दौड़ती रही फायर ब्रिगेड की गाड़ियां

दो दिन से आगजनी की घटनाओं से किसानों को लाखों का नुकसान

जहाजगढ़, ढराणा, सिलाना, सिलानी भदानी व मदाना में भड़की आग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

शुक्रवार की रात जहां जिले के विभिन्न क्षेत्रों में हुई आगजनी की घटनाओं में किसानों की सैकड़ों एकड़ फसल एवं फसल अवशेष आग की भेंट चढ़ गए, वहीं तेज हवाओं ने आग पर तेल छिड़कने का कार्य किया। जिस कारण फायर ब्रिगेड कर्मचारियों को भी आग पर काबू पाने के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। गनीमत यह रही कि अधिकांश किसानों द्वारा फसल की कटाई की जा चुकी थी। कुछ किसान ऐसे थे जिनकी फसल अभी खेतों में खड़ी थी। जहाजगढ़ गांव में रात को लगी आग ने जहां तीस से पैंतीस एकड़ में खड़े गेहूं के फाने व फसल जल कर स्वाहा गए। सूचना दिए जाने के करीब डेढ़ घंटे बाद मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड के चलते रोषित ग्रामीणों ने जाम भी लगा दिया था जो शनिवार की सुबह प्रशासनिक अधिकारियों के आश्वासन पर खोला गया। जिले में जहाजगढ़ के अलावा ढराणा, सिलाना, सिलानी, भदानी, मदाना, आदि गांवों के खेतों में आग लगी जिसमें किसानों को भारी नुकसान हुआ। शनिवार को भी दिन भर फायर ब्रिगेड की गाड़ियां आग की घटनाओं पर काबू पाने के उद्देश्य से सायरन बजाते हुए एक गांव से दूसरे गांव दौड़ती रही। फायर ब्रिगेड कर्मचारियों के अनुसार दिन के समय पाटौदा, अकेहड़ी-मदनपुर व मुंडाहेड़ा के खेतों में अज्ञात कारणों से आग लगी। जिसके बाद कर्मचारियों ने मौके पर पहुंच कर आग पर काबू पाया।

झज्जर। आग लगने के कारण सुलगते हुए खेत। (इनसेट में) खेत में मौजूद ग्रामीण व दमकल कर्मचारी।

सरपंच पर युवक को रिवाल्वर का बट मारने व फायरिंग करने का आरोप

■ ट्रांसफार्मर लगाने को लेकर आसंडा में विवाद, वीडियो वायरल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

■ घटना के विरोध में ग्रामीणों ने जाम लगाया

आसंडा में बिजली का ट्रांसफार्मर लगवाने को लेकर सरपंच और एक परिवार के बीच झगड़ा हो गया। दोनों पक्षों में हाथापाई हुई। आरोप है कि इस दौरान सरपंच ने युवक के सिर पर रिवाल्वर के बट से प्रहार कर उसे घायल कर दिया। इतना ही नहीं, जान से मारने की नीयत से फायर भी कर दिया। घटनाक्रम की एक वीडियो इंटरनेट मीडिया पर वायरल है, जिसमें सरपंच के हाथ में हथियार दिखाई दे रहा है और दो युवकों के साथ उनकी खींचतान चल रही है। हालांकि मामले की असल वजह जांच का विषय है। पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। शनिवार की सुबह करीब साढ़े दस बजे यह घटनाक्रम हुआ। घटनाक्रम के बाद ग्रामीणों ने कुछ देर के लिए मार्ग भी अवरुद्ध कर दिया था। लेकिन पुलिस के समझाने के बाद ग्रामीण शांत हुए। वहीं घायल युवक सत्यवान को नागरिक अस्पताल बहादुरगढ़ में भर्ती कराया। पुलिस ने अस्पताल में पहुंचकर घायल के बयान लिए। इस घटना पर घायल युवक व उनके परिजनों ने रोष जताया है। शिकायतकर्ता सत्यवान का कहना है कि शनिवार को गांव का सरपंच फिरनी पर बिजली निगम के कर्मचारियों के साथ खंभे, ट्रांसफार्मर लगवाने आया था। वह हमारे मकान की दीवार के निकट ट्रांसफार्मर लगवाने लगा। हमने इस पर आपत्ति जताई तो विवाद हो गया। सरपंच ने मुझे थप्पड़ मारा। फिर अपना लाइसेंसी रिवाल्वर निकालकर मेरे सिर पर उसका बट मारा, जिससे खून बहने लगा। इतना ही नहीं, जान से मारने की नीयत से गोली भी चलाई। गनीमत रही कि मोहित ने सरपंच को उस वक्त धक्का दे दिया और गोली किसी को नहीं लगी। इसके बाद आरोपी सरपंच धमकी देकर चला गया। उधर, जांच अधिकारी राजीव का कहना है कि गांव आसंडा में झगड़े के दौरान गोली चलने और एक युवक के सिर में बट मारने की सूचना मिली थी।

बहादुरगढ़। घायल सत्यवान के बयान दर्ज करता पुलिसकर्मी।

PACE GROUP OF INSTITUTIONS
हरियाणा में झज्जर,झज्जर में पेस,पढ़ाई में है सर्वश्रेष्ठ
झज्जर का पहला इंटरनेशनल एजुकेशनल ब्रांड
Nursery - Class 12
Dropper Batch • Science • Commerce • Humanities
SPECIAL COACHING
IIT, NEET, UPSC, CUET , CA, CLAT, NDA, IMO, KVPY, NTSE, RMO, VVM
जहाँ कोटा और सीकर में क्लास रूम सफलता दर 10% से भी कम रहता है |
वहीं पेस झज्जर के 60% बच्चों ने पाई सफलता |
पेस झज्जर के 30 बच्चों में से 18 बच्चों ने किया जेई एडवांस के लिए क्वालिफाई !
SAURAV — PERCENTILE 100
HARSH PUNIA DELHI GATE (JHAJJAR) — PERCENTILE 98.6
HARSH JANGRA (GOCHHI) — PERCENTILE 98 CHEM
HARIT KADIAN (D.MAJRA) — PERCENTILE 97.4
ANSHUL KADIAN SEC-06(JJR) — PERCENTILE 97
KOMAL (JHAJJAR) — PERCENTILE 99.8 CHEM
SIMRAN (JHAJJAR) — PERCENTILE 96
KAPIL DEV (CHAMANPURA) — PERCENTILE 95
MAHAK (JHAJJAR) — PERCENTILE 94
PARUL KUMARI (SUBHASH NAGAR,JJR) — PERCENTILE 93
COACHING CAMPUS NEAR SAVERA SCHOOL, ARYA NAGAR, JHAJJAR
SCHOOL CAMPUS MILE STONE, 2KM, ROAD, NEAR RAILWAY CROSSING, DHAUR, JHAJJAR
WWW.PACEGROUPOFINSTUTIONS.COM +91 7419888021,22,23,24,25,26,27,28
IIT DROPPER BATCH STARTS FROM (21ST APRIL 2025) ONE WEEK DEMO FREE

हाइब्रिड फंड्स हो सकते हैं निवेश के बढ़िया विकल्प

▶▶ बाजार में उथल-पुथल होने पर निवेशक घबरा जाते हैं
▶▶ प्योर इक्विटी फंड्स में पैसे लगाने से कतराने लगते हैं
▶▶ ऐसे समय में हाइब्रिड फंड्स अच्छा रिटर्न देने में सक्षम

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

इस समय देश के इक्विटी मार्केट में भारी उतार-चढ़ाव का दौर काफी समय से जारी है। हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा शुरू किए गए टैरिफ वॉर ने इसे और हवा दे दी है। इस माहौल में कई निवेशकों को प्योर इक्विटी फंड्स में निवेश करना बहुत जोखिम भरा लगने लगा है। उनके मन में यह सवाल हो सकता है कि ऐसा कौन सा विकल्प है, जहां कम रिस्क में बेहतर रिटर्न मिलने की गुंजाइश हो सकती है? उनके इस सवाल का एक जवाब हाइब्रिड म्यूचुअल फंड्स में भी मिल सकता है। हाइब्रिड म्यूचुअल फंड्स के जरिये एक ही स्कीम में पैसे लगाकर इक्विटी, डेट और कई बार गोल्ड जैसे एसेट्स में भी निवेश किया जा सकता है। इस डायवर्सिफिकेशन की वजह से रिस्क और रिटर्न के बीच बेहतर बैलेंस बना रहता है। बाजार की गिरावट के दौरान डेट में किया गया निवेश सुरक्षा देता है और जब बाजार चढ़ता है तो इक्विटी से रिटर्न बढ़ते हैं। हाइब्रिड फंड्स भी कई अलग-अलग कैटेगरी में बंटे होते हैं, जिनमें निवेशक अपने निवेश के लक्ष्य, इनवेस्टमेंट होराइजन और रिस्क लेने की क्षमता के आधार पर सही फंड का चुनाव कर सकते हैं। हाइब्रिड फंड्स की प्रमुख कैटेगरी की खूबियों के साथ-साथ उनके टॉप फंड्स के पिछले 1 साल, 3 साल और 5 साल के रिटर्न की रेंज का जिक्र किया है, ताकि उनके बारे में निवेशकों को शुरुआती आइडिया मिल जाए।

टॉप 5 फंड्स का पिछला रिटर्न

कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड : कम रिस्क में स्टेबल रिटर्न
अगर आप रिस्क से बचते हुए फिक्स्ड डिपॉजिट से थोड़ा बेहतर रिटर्न चाहते हैं, तो कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड्स आपके लिए सही विकल्प हो सकते हैं। इनमें 75-90 फीसदी निवेश डेट इंस्ट्रूमेंट्स में होता है और केवल 10-25 फीसदी इक्विटी में लगाया जाता है। ऐसे फंड्स तीन साल या उससे अधिक समय के निवेश के लिए बेहतर रहते हैं।

पिछला रिटर्न

- 1 साल में : 10.75 % से 11.45%
- 3 साल में : 10.22 % से 11.78 %
- 5 साल में :13.11% से 14.15%
- रिस्क लेवल : मॉडरेटली हाई

बैलेंस्ड हाइब्रिड फंड्स इक्विटी और डेट का बेहतर संतुलन
जो निवेशक बेहतर रिटर्न के लिए थोड़ा बहुत रिस्क ले सकते हैं, उनके लिए बैलेंस्ड हाइब्रिड फंड्स बेहतर विकल्प हैं. इनमें इक्विटी और डेट का हिस्सा लगभग 50:50 होता है। हालांकि फिलहाल इस कैटेगरी में स्कीम्स की संख्या सिर्फ 2 है।

पिछला रिटर्न

- 1 साल में :10.56% से 11.59%
- 3 साल में: कोई फंड नहीं
- 5 साल में: कोई फंड नहीं
- रिस्क लेवल : मॉडरेटली हाई से बहुत अधिक

डायनैमिक एसेट एलोकेशन फंड्स (बीएएफ): एक्टिव स्ट्रैटजी का फायदा : जो निवेशक बाजार की स्थिति के अनुसार अपने पोर्टफोलियो का संतुलन बदलते रहना चाहते हैं, उनके लिए डायनैमिक एसेट एलोकेशन या बैलेंस्ड एडवांटेज फंड बेहतर साबित हो सकते हैं। ये फंड बाजार की चाल के अनुसार इक्विटी और डेट में 0 से 100 प्रतिशत तक का संतुलन बनाते हैं। हालांकि इनमें जोखिम ज्यादा होता है, लेकिन लंबे समय में अच्छे रिटर्न की संभावना भी होती है। इनमें कम से कम 5 साल या उससे ज्यादा समय के लिए निवेश करना बेहतर रहता है।

पिछला रिटर्न

- 1 साल में 10.51% **to** 13.12%
- 3 साल में: 12.84% **to** 19.19%
- 5 साल में: 17.34% **to** 26.49%

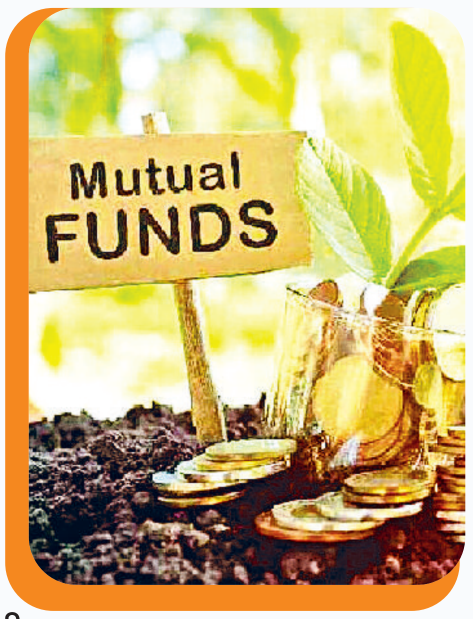

रिस्क लेवल : बहुत अधिक

मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स: डायवर्सिफिकेशन पर जोर
अगर आप अपने निवेश को अलग-अलग एसेट क्लासेज जैसे इक्विटी, डेट और गोल्ड में बांटना चाहते हैं, तो मल्टी एसेट फंड बेहतरीन विकल्प हैं। इस कैटेगरी के फंड्स में तीनों एसेट में कम से कम 10% निवेश किया जाता है। इनमें कम से कम 5 साल या उससे ज्यादा समय के लिए निवेश करना बेहतर रहता है।

पिछला रिटर्न

- 1 साल में: 11.74% **to** 16.38%
- 3 साल में: 14.31% **to** 18.11%
- 5 साल में: 18.99% **to** 31.87%
- रिस्क लेवल : अधिक से बहुत अधिक

इक्विटी सेविंग्स फंड्स: टैक्स सेविंग के साथ स्टेबल इनकम
टैक्स एफिशिएंट और स्टेबल रिटर्न चाहने वाले निवेशकों के लिए इक्विटी सेविंग्स फंड सही विकल्प हैं। इनमें इक्विटी, डेट और आर्बिट्राज का मिक्स होता है। इनमें कम से कम 3 साल या उससे ज्यादा समय के लिए निवेश करना बेहतर रहता है।

पिछला रिटर्न

- 1 साल में: 9.54% **to** 11.59%
- 3 साल में: 11.01% **to** 11.96%
- 5 साल में: 14.56 % **to** 16.62%
- रिस्क लेवल : मॉडरेट से मॉडरेटली हाई

आर्बिट्राज फंड्स: शॉर्ट टर्म और टैक्स एफीशिएंट
अगर आप कुछ महीनों के लिए पैसे पार्क करना चाहते हैं और टैक्स भी कम देना चाहते हैं, तो आर्बिट्राज फंड सही विकल्प हो सकते हैं। इनमें रिस्क काफी कम होता है और रिटर्न भी एफडी जैसे हो सकते हैं। इनमें कुछ महीनों से लेकर 1 साल तक के लिए निवेश करना बेहतर माना जाता है।

पिछला रिटर्न

- 1 साल में: 7.96% **to** 8.03%
- 3 साल में: 7.41% **to** 7.66%
- 5 साल में: 6.20% **to** 6.34%
- रिस्क लेवल : कम जोखिम

एग्रेसिव हाइब्रिड फंड : डेट के कुशन के साथ इक्विटी में निवेश
जो निवेशक पहली बार इक्विटी में निवेश शुरू करना चाहते हैं लेकिन सीधे प्योर इक्विटी फंड में जाने से घबराते हैं, उनके लिए एग्रेसिव हाइब्रिड फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं। इनका 65% से 80% तक निवेश इक्विटी में और बाकी डेट में होता है। इनमें रिस्क बाकी हाइब्रिड फंड्स के मुकाबले अधिक होता है, लेकिन बेहतर रिटर्न मिलने की गुंजाइश भी रहती है।

पिछला रिटर्न

- 1 साल में: 11.85% **to** 17.29%
- 3 साल में: 16.08% **to** 20.75%
- 5 साल में: 24.56% **to** 29.34%
- रिस्क लेवल : बहुत अधिक

अपने लिए चुनें सही हाइब्रिड फंड : बाजार की उथल-पुथल के बीच हाइब्रिड फंड्स आपके आर्थिक उद्देश्यों के मुताबिक लॉन्ग टर्म इनवेस्टमेंट के लिए एक स्मार्ट ऑप्शन हो सकते हैं। हर कैटेगरी का रिस्क-रिटर्न प्रोफाइल अलग है, इसलिए फंड कैटेगरी को सावधानी के साथ चुनें।

क्या म्यूचुअल फंड में निवेश सबके लिए सही

■ अगर आप भी एसआईपी के जरिये निवेश कर रहे हैं तो जान कुछ बातें
■ म्यूचुअल फंड के 80% निवेशकों को नहीं पता है कि वह कहां लगा रहे पैसा
■ उसका फंड मैनेजर कौन है, पूछेंगे तो सिर्फ यही बोलेंगे कि एसआईपी कर रहे

अलर्ट
बिजनेस डेस्क

अक्सर सुनने में आता है कि सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआई) के जरिये निवेश करना सबसे बेहतर तरीका होता है। लेकिन ऐसा क्यों है। इस पर कोई विचार नहीं करता, जबकि निवेश करने से पहले पता होना चाहिए कि एसआईपी के जरिये निवेश क्यों सही है। यदि यह जानकारी आपको नहीं है तो नुकसान भी हो सकता है। निवेश करने के बाद स्कीम का परफॉर्मेंस भी समय-समय पर जांचना भी जरूरी होता है। टीवी, रेडियो, ऑनलाइन और सोशल मीडिया के जरिये 'म्यूचुअल फंड सही है' का स्लोगन हम सभी ने जरूर सुना है। आए दिन कोई न कोई क्रिकेटर, बॉलीवुड स्टार या दूसरे फिल्ड के सेलिब्रिटी म्यूचुअल फंड का प्रचार करते दिख जाते हैं। म्यूचुअल फंड सही है। लेकिन, क्या वकई में म्यूचुअल फंड सभी के लिए बिल्कुल सही है? इसका जवाब है नहीं। म्यूचुअल फंड सभी के लिए सही नहीं है। अगर आपका लक्ष्य छोटा है या उम्र अधिक है तो म्यूचुअल फंड सही नहीं है। बाजार में मौजूदा गिरावट के बाद कई लोगों का म्यूचुअल फंड का रिटर्न 3 साल बाद भी निगेटिव हो गया है। इस रिपोर्ट के जरिये हम आपको बताएंगे कि किसके लिए म्यूचुअल फंड सही हैं और किसके लिए नहीं।

एसआईपी के फायदे

- नियमित निवेश: एसआईपी आपको नियमित रूप से निवेश करने की अनुमति देता है, जो आपके निवेश लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकता है।
- रुपये कॉस्ट एवरेजिंग: एसआईपी आपको रुपये कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ उठाने की अनुमति देता है, जिसमें आप बाजार की उतार-चढ़ाव के बावजूद नियमित रूप से निवेश करते हैं।
- निवेश अनुशासन: एसआईपी आपको निवेश अनुशासन बनाए रखने में मदद कर सकता है, जो आपके निवेश लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकता है।
- लंबी अवधि के लिए निवेश: एसआईपी आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करने की अनुमति देता है, जो आपके निवेश लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

एसआईपी के प्रकार : म्यूचुअल फंड एसआईपी: म्यूचुअल फंड एसआईपी में आप नियमित रूप से म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। **स्टॉक एसआईपी:** स्टॉक एसआईपी में आप नियमित रूप से स्टॉक में निवेश करते हैं।

आंख मूंद कर निवेश नहीं करें

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले 80% निवेशकों को नहीं पता है कि वह किस फंड में निवेश कर रहे हैं। उसका फंड मैनेजर कौन है? पूछेंगे तो बोलेंगे कि हम तो एसआईपी कर रहे हैं, जबकि एसआईपी एक जरिया है म्यूचुअल फंड में निवेश करने का। इसलिए म्यूचुअल फंड में निवेश करने से पहले जानकारी जुटाएं। किसी की सलाह पर सुनी सुनाई बातों पर निवेश न कर दें। म्यूचुअल फंड में सही फंड का चुनाव करना बहुत जरूरी है। ऐसा नहीं करने पर नुकसान उठाना होगा। सही फंड चुनने के लिए आपको बाजार को समझना होगा। निवेश के तरीकों और अपने लक्ष्य को देखना होगा। यह जानना जरूरी है कि हम निवेश क्यों और किस लिए कर रहे हैं। इसलिए निवेश करते समय एक बार पूरी जानकारी जुटाएं।

जोखिम लेने की क्षमता है तो ही निवेश करें

अगर आपमें जोखिम लेने की क्षमता है तो ही म्यूचुअल फंड में एसआईपी के जरिय निवेश करें। म्यूचुअल फंड निवेश पर मार्केट रिस्क, लिक्विडिटी रिस्क, क्रेडिट रिस्क, जीडीपी ग्रोथ रिस्क आदि होता है। अगर आप जोखिम लेने की क्षमता रखते हैं तो ही निवेश करें। अन्यथा बैंक एफडी, पीपीएफ, आरडी या दूसरी फिक्स्ड इनकम इन्वेस्टमेंट स्कीम में निवेश करें। इससे आपको नुकसान नहीं होगा और आपको रिटर्न मिलता रहेगा। भले की कुछ कम क्यों न हो।

रिटर्न निवेश का पैमाना नहीं

लोग अक्सर सोचते हैं कि जो फंड अभी सबसे अच्छा प्रदर्शन कर रहा है, वही उनके लिए सही रहेगा। लेकिन हर म्यूचुअल फंड स्कीम अलग होती है। अगर उस स्कीम का इंवेस्टमेंट ऑब्जेक्टिव और रिस्क प्रोफाइल आपकी जरूरतों से मेल नहीं खाता, तो वह फंड आपके लिए सही नहीं है। इसलिए इन बातों का ध्यान रखना जरूरी है वरना आप झटका भी खा सकते हैं।

स्कीम को जरूर जांचें

यह जरूरी है कि आप फंड हाउस की इंवेस्टमेंट स्ट्रैटेजी, फंड मैनेजर की योग्यता, और रिस्क मैनेजमेंट प्रोसेस को भी समझें। एक ही कैटेगरी में अलग-अलग स्कीम्स का प्रदर्शन अलग हो सकता है। कोई भी निवेश करने से पहले एक बार स्कीम को जरूर जांच लें। उसके प्रदर्शन पर नजर रखें और समीक्षा करते रहें।

निगरानी करना सीखें

सही स्कीम चुन लेना ही काफी नहीं। निवेश के बाद स्कीम का परफॉर्मेंस समय-समय पर जांचना भी जरूरी है। समय-समय पर देखें कि क्या फंड आपके लक्ष्य के अनुसार चल रहा है? अगर नहीं तो उसमें बदलाव करें। अगर ये पांच काम आप कर सकते हैं तो ही म्यूचुअल फंड में निवेश करें। आप अपने पैसे को सुरक्षित भी रख पाएंगे और सही रिटर्न भी ले पाएंगे। अन्यथा आप फिक्स्ड इनकम प्रोडक्ट में निवेश करें।

पहला घर खरीदने के लिए करें फाइनेंशियल प्लानिंग

● कुछ टिप्स आपके आ सकते हैं काफी काम ● एक बड़ा डाउन पेमेंट दे सकता है राहत ● लोन की राशि और ब्याज के बोझ को कर सकता है कम ● संपत्ति के मूल्य का 20-30% बचाने का टारगेट रखें

अगर आप भी अपना पहला घर खरीदने जा रहे हैं तो कुछ बातों को पल्ले बांध लें। इससे आपको घर खरीदने में आसानी रहेगे और लोन की किस्तें भी समय पर चुका पाएंगे। बस आपको कुछ टिप्स को फॉलो करना होगा। इसके बाद अपना मकान बनाने में कोई परेशानी नहीं होगी। अक्सर देखने में आता है कि जब आप पढ़ाई करते हैं फिर अपना करियर शुरू करते हैं तो इसके बाद एक घर खरीदने के सपने को पंख लगने शुरू हो जाते हैं। ज्यादातर लोगों की ख्वाहिश होती है कि एक घर अपना हो। इसके लिए आपको काफी तैयारी करनी होती है। प्लानिंग करनी होती है। तब जाकर आप अपना घर खरीद पाते हैं। अगर आप अपना पहला घर खरीदने की सोच रहे हैं तो आपको इसके लिए पहले से कुछ तैयारियां करनी चाहिए, ताकि आगे आपके लिए किसी तरह की परेशानी न आए। इसके लिए आपको कुछ खास बातों पर गौर करना चाहिए। इस रिपोर्ट में हम आपको ऐसी ही कुछ जानकारी देंगे जो आपके काफी काम आएंगी।

पहले होमवर्क करना जरूरी

घर खरीदने से पहले आपको कुछ होमवर्क करना होगा। इससे आपके कई काम आसान हो जाएंगे। सबसे पहले यह तय करें कि जो मकान खरीदने जा रहे हैं वह अप्रूव्ड है या नहीं। इसके बाद उसके सभी कागज एक बार जरूर चेक करें और किसी जानकार से भी जांच करवा लें, ताकि आपके साथ कोई धोखाधड़ी न हो सके। असली मालिक कौन है। प्रॉपर्टी कौन सी जगह है। बिल्डर सही है या नहीं आद। इसके बाद आप अपने सपनों का घर आसानी से खरीद सकेंगे।

अपनी वित्तीय क्षमता को समझें

पहला घर खरीदने के फैसले से पहले आपको अपनी वित्तीय क्षमता और अपनी वित्तीय सेहत का आकलन करना चाहिए। अपनी इनकम, खर्च और बचत तय करें। यह कैलकुलेट करें कि आप मासिक किस्त (ईएमआई) के लिए कितना फंड आराम से अलॉट कर सकते हैं। टाटा हाउसिंग के मुताबिक, सामान्य नियम यह है कि आपकी ईएमआई आपकी शुद्ध इनकम के 30% से अधिक नहीं होनी चाहिए। इससे ज्यादा होगी तो आपको बाद में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। अपने फंड का एक बार आकलन जरूर कर लें।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

डाउनपेमेंट के लिए बचत करें

घर खरीदते समय जितना संभव हो सके डाउनपेमेंट कर देना चाहिए और बाकी अमाउंट के लिए होम लोन लेना चाहिए। डाउन पेमेंट के लिए बचत करें। एक बड़ा डाउन पेमेंट आपके लोन की राशि और ब्याज के बोझ को काफी कम कर सकता है। संपत्ति के मूल्य का कम से कम 20-30% बचाने का टारगेट रखें। इस फंड को बनाने के लिए रेकरिंग डिपोजिट या सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) जैसे ऑप्शन पर विचार कर सकते हैं।

होम लोन विकल्पों को तलाशें

अगर आपको पहला घर खरीदने के लिए डाउनपेमेंट की रकम के अलावा होम लोन लेने की जरूरत हो तो अलग-अलग बैंकों या उधारदाताओं पर शोध करें, और ब्याज दरों, अवधि विकल्पों और छिपे हुए शुल्कों की तुलना जरूर करें। प्रधान मंत्री आवास योजना जैसी सरकार समर्थित योजनाएं अतिरिक्त लाभ प्रदान कर सकती हैं।

छिपे हुए खर्च का जरूर रखें ध्यान

घर खरीदने में कई बार ऐसे खर्च आपके सामने आ सकते हैं जिसके बारे में आपको शायद पहले से पता न हो। इस वजह से छिपी हुई लागतों को ध्यान में रखें। पहली बार घर या प्रॉपर्टी की लागत और संपत्ति खरीदने के लिए किसी भी लोन के अलावा, कई खर्चे सामने आएंगे जैसे स्टाम्प ड्यूटी, रजिस्ट्रेशन शुल्क, प्रॉपर्टी टैक्स और मेंटेनेंस कॉस्ट आवश्यक विचार हैं। इनके लिए बजट बनाना वित्तीय आश्चर्यों से बचाएगा।

जल्दबाजी न करें

हर इंसान चाहता है कि वह खुद के घर में रहें। खुद का घर खरीदना हर व्यक्ति के लिए बहुत ही बड़ी बात होती है। कई लोग ऐसे होते हैं, जो बैंक से होम लोन लेकर घर खरीदते हैं, तो कुछ लोग अपनी जिंदगीभर की कमाई को लगाकर घर खरीदते हैं। ऐसे में घर को खरीदते समय कभी भी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। घर खरीदते समय ऐसी कई चीजें होती है, जिनके बारे में आपको अच्छे से जान लेना चाहिए। आपको अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग काफी ध्यान से करनी चाहिए। फाइनेंस के अलावा भी ऐसी कई चीजें होती है, जिनके बारे में आपको ध्यान रखना चाहिए।

बचत फैक्टर फंडों का एयूएम 14,000 करोड़ से बढ़कर 2024 के अंत तक 40,000 करोड़ से अधिक हुआ, लोगों को खूब भा रहा

गुणवत्ता कारक निवेश : आधारभूत निवेश करने का एक अनुशासित तरीका, देश में अब इसके प्रति लगातार बढ़ता जा रहा है रुझान

जानकारी
प्रतीक ओसवाल

भारत में कारक-आधारित निवेश के प्रति रुझान बढ़ा है, क्योंकि निवेशक विभिन्न बाज़ार चक्रों के दौरान लाभ प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित रणनीतियों की तलाश करते हैं। यह रणनीति पैसिव और ऐक्टिव निवेश के बीच के अंतर को पाटने का काम करती है, क्योंकि यह दोनों तरीकों में से सबसे उपयुक्त बातों को मिलाकर बनती है। पारंपरिक निवेश रणनीति, जो बाज़ार के उतार-चढ़ावों से प्रभावित हो सकती है, से अलग कारक आधारित निवेश अनुकूल विशेषताओं वाले शेयरों को पहचानने के लिए एक संरचित दृष्टिकोण देती है। भारत में फैक्टर फंडों का एयूएम पिछले वर्ष में दोगुने से अधिक हो गया है, जो एक वर्ष पहले के14,000 करोड़ रुपये की तुलना में 2024 के अंत तक 40,000 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। विभिन्न कारक रणनीतियों में से, गुणवत्ता कारक निवेश पर अक्सर उस अवधि के दौरान विचार किया जाता है जब मूल्यांकन अपने चरम पर होता है, विकास के अवसर कम हो जाते हैं, और निवेशक मजबूत बुनियादी बातों वाली कंपनियों पर ध्यान केंद्रित करके स्थिरता की तलाश करते हैं। ऐसी अवधियों में गुणवत्ता कारक अस्थिर बाज़ार स्थितियों में कुछ हद तक लचीलापन और स्थिरता प्रदान करके निवेशकों को अनिश्चितता का प्रबंधन करने में मदद कर सकता है। स्थिरता और विकास को संतुलित करने की इसकी क्षमता के कारण बाज़ार में कम विश्वास होने पर यह एक पसंदीदा रणनीति बन जाती है।

क्या है गुणवत्ता कारक

गुणवत्ता कारक एक निवेश रणनीति है, जिसके अंतर्गत उन कम्पनियों को चुना जाता है, जिनकी बुनियादी बातें मज़बूत होती हैं। यह उन फर्मों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिनके पास लाभप्रदता, कुशल पूंजी उपयोग और वित्तीय स्थिरता का सिद्ध ट्रैक रिकॉर्ड है। ये कंपनियां अक्सर कम अस्थिरता प्रदर्शित करती हैं, जिससे वे स्थिरता की तलाश करने वाले निवेशकों के लिए उपयुक्त बन जाती हैं।

यह एक विश्वसनीय रणनीति

गुणवत्तापूर्ण निवेश अस्थिर बाजारों में बने रहने के लिए एक विश्वसनीय रणनीति है, जिसमें मजबूत बुनियादी बातों, स्थिर आय और कुशल पूँजी आवंटन वाली कंपनियों पर जोर दिया जाता है। भारतीय और वैश्विक बाजारों में मौजूदा अनिश्चितता को देखते हुए, गुणवत्ता कारक निवेशकों को दीर्घकालिक विकास के अवसरों को प्राप्त करते हुए नकारात्मक जोखिमों से बचने का एक संरचित तरीका प्रदान करता है। जैसे-जैसे निवेश के रुझान बदलते हैं, वित्तीयऔर मौलिक रूप से मजबूत कंपनियों पर ध्यान केंद्रित करने से निवेशकों को आर्थिक मंदी का सामना करने और भविष्य के बाजार सुधारों में भाग लेने में मदद मिल सकती है।

ये अनुपात बताए

- **इक्विटी पर रिटर्न (आरओई):** यह मापता है कि कंपनी शेयरधारकों की इक्विटी से कितने प्रभावी ढंग से लाभ कमाती है।
- **ऋण-से-इक्विटी अनुपात :** यह अनुपात वित्तीय उत्तोलन और कंपनी द्वारा अपने ऋण को जिम्मेदारी सेप्रबंधित करने की क्षमता का आकलन करता है।
- **आय स्थिरता :** यह अनुपात समय के साथ कंपनी की आय की स्थिरता का मूल्यांकन करता है।
- **उपार्जन अनुपात :** यह नकदी प्रवाह प्रबंधन का विश्लेषण करके आय की गुणवत्ता निर्धारित करता है।
- इन कारकों पर ध्यान केंद्रित करके, गुणवत्तापूर्ण निवेश यह सुनिश्चित करता है कि पोर्टफोलियो में चयनित कंपनियों के पास टिकाऊ व्यवसाय मॉडल हों और वे वित्तीय संकट से कम प्रभावित हों।

सबसे लंबा बुल रन

बीएसई क्वालिटी इंडेक्स ने पांच सालों में 22% का वार्षिक प्रतिफल दिया, जो इसके मूल सूचकांक, बीएसई लार्ज मिडकैप से 4.01% बेहतर प्रदर्शन है। 2020 के दौरान, जब बाजार दूसरी छमाही में रिकवरी की राह पर था, इसने मजबूती से प्रदर्शन किया और 26% का प्रतिफल दिया। लंबी अवधि में भी, गुणवत्ता सूचकांक ने पिछले 19 कैलेंडर वर्षों में 72% मामलों में अपने मूल सूचकांक से बेहतर प्रदर्शन किया है, जो इसकी निरंतरता को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि गुणवत्ता सिर्फ़ एक कारक नहीं है, बल्कि यह दीर्घकालिक बेहतर प्रदर्शन की तलाश के लिए एक संरचित दृष्टिकोण भी हो सकता है।

क्वालिटी फैक्टर विश्वसनीय विकल्प

मजबूत वित्तीय मेट्रिक्स वाली कंपनियां आम तौर पर चुनौतीपूर्ण आर्थिक स्थितियों से निपटने और व्यापक बाजार के स्थिर होने पर तेज़ी से उबरने के लिए बेहतर तरीके से सुसज्जित होती हैं। अनिश्चित समय या शुरुआती रिकवरी चरणों के दौरान, निवेशक अक्सर सिद्ध ट्रैक रिकॉर्ड वाली वित्तीय रूप से स्थिर कंपनियों की ओर आकर्षित होते हैं। गुणवत्ता कारक मंदी और बाजार की रिकवरी के दौरान बाज़ार में बने रहनेके लिए विशेष रूप से प्रभावी होता है। मंदी के दौर में, इसने औसतन सिर्फ़ -27% की गिरावट का अनुभव किया, जो कम अस्थिरता कारक से थोड़ा कम है, जिसे अपनी प्रकृति के अनुसारकम गिरावट का अनुभव करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। दिलचस्प बात यह है कि रिकवरी चरण के दौरान, क्वालिटी फैक्टर ने 41% का संचयी वार्षिक रिटर्न दिया, जो मूल्यांकन कारक फैक्टर के बाद दूसरे स्थान पर है। यह स्थिरता इसे विभिन्न बाजार चक्रों में संतुलित प्रदर्शन की तलाश करने वाले निवेशकों के लिए एक आकर्षक विकल्प बना सकती है।

निष्क्रिय गुणवत्ता कारक निवेश क्यों अहम

1. मानवीय पूर्वाग्रहों को दूर करता है - गुणवत्ता कारक में पैसिव निवेश मात्रात्मक डेटा पर निर्भर करता है, जो भावनात्मक निर्णय लेने से बचाता है।
2. व्यवस्थित और पारदर्शी - एक नियम-आधारित दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि इसमें केवल वित्तीय रूप से मजबूत कंपनियों को ही शामिल किया जाए।
3. बेहतर जोखिम-समायोजित प्रतिफल प्रदान करता है - गुणवत्ता निवेश कम लागत के साथ स्थिरता, लचीलापन व टिकाऊ दीर्घकालिक विकास प्रदान करता है।

इक्विटी निवेश के लिए एक अनुशासित दृष्टिकोण की तलाश करने वाले निवेशकों के लिए, निष्क्रिय गुणवत्ता कारक फंड सक्रिय स्टॉक चयन के लिए एक कुशल, कम लागत वाला विकल्प हो सकता है।

स्रोत: एनएसई; बीएसई; एसीईएमएफ; एमओएएमसी

(लेखक मोतीलाल ओसवाल एसेट मेनेजमेंट कंपनी लि. के बिजनस पैसिव फंड प्रमुख हैं)

(डिस्क्लेमर : म्यूचुअल फंड निवेश बाजार जोखिमों के अधीन हैं, योजना से संबंधित सभी दस्तावेजों को ध्यान से पढ़ें।)

खबर संक्षेप

फसल अवशेषों को उपयोग में लाएं किसान

झज्जर। डीसी प्रदीप दहिया ने किसानों को सलाह दी है कि खेत में गेहूं की कटाई के बाद, अवशेषों को ना जलाएं। इससे प्रदूषण

फैलता है जो हानिकारक है। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेषों में आगजनी करने पर पूर्ण प्रतिबंध भी लगाया हुआ है। ऐसे में किसान गेहूं फसल की कटाई के बाद बचे हुए अवशेषों में आग न लगाएं बल्कि इसका उचित प्रकार से प्रबंधन करें, जैसे कि पशु चारे के तौर पर या खेत में ही मिलाकर खाद के रूप में उपयोग करें।

ग्रामीण सफाई कर्मचारियों का प्रदर्शन 22 को

झज्जर। बजट परित न होने से नाराज ग्रामीण सफाई कर्मचारी यूनियन ने 22 अप्रैल को एक दिवसीय विरोध प्रदर्शन का निर्णय लिया है। यूनियन के जिला सचिव संदीप मारौत ने बताया कि अप्रैल का महीना आमतौर पर सबसे खर्चीला महीना होता है। इस माह में बच्चों की फीस, किताबें, ड्रेस, साल भर के लिए अनाज, पशुओं के लिए चारा आदि खरीदना पड़ता है। सैलरी ना मिलने की वजह से सारे काम अधूरे पड़े हुए हैं। सरकार सफाई कर्मचारियों की तरफ कोई विशेष ध्यान नहीं दे रही।

गंदगी में मच्छर-मक्खी पनप रहे

नागरिक अस्पताल के बाहर गंदगी की भरमार

बहादुरगढ़। ट्रामा सेंटर के बाहर भरा नाले का गंदा पानी। फोटो :हरिभूमि

■ स्वच्छता संबंधित आवश्यक कदम उठाने की दरकार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

नागरिक अस्पताल परिसर के आसपास स्वच्छता के दावे दम तोड़ रहे हैं। यहां रोहतक-दिल्ली रोड स्थित ट्रामा सेंटर के बाहर गंदा पानी भरा हुआ है। गंदगी में मच्छर-मक्खी पनप रहे हैं। इस तरफ किसी का ध्यान नहीं है।

पिछले काफी समय से यह समस्या गहराई हुई है। दरअसल, यहां ट्रामा सेंटर के बाहर से गुजर रहे नाले की निकासी बाधित है। इसलिए कई दिनों से गंदा पानी सड़ रहा है। आसपास जूस आदि की दुकानें भी हैं। गंदगी भरे माहौल के बीच लोग यहां जूस पीते हैं। साथ ही यहीं से गुजरकर ट्रामा सेंटर में जाते हैं। शहर के निवासी नवीन का कहना है कि अस्पताल के आसपास तो स्वच्छता भरा माहौल होना चाहिए। लेकिन हमारे यहां तस्वीर बिल्कुल विपरीत है। अस्पताल के साथ लगते पावर हाउस मार्ग पर तो यह समस्या थी ही, अब रोहतक-दिल्ली रोड की तरफ ट्रामा सेंटर के बाहर भी हालात गंभीर हैं। अस्पताल परिसर के भी कुछ हिस्से में कई बार ऐसे हालात दिख जाते हैं। इन हालातों पर ध्यान देते हुए यहां स्वच्छता संबंधित आवश्यक कदम उठाने की दरकार है।

सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति किया जागरूक

■ सड़क सुरक्षा सिर्फ नियम नहीं, बल्कि जीवनशैली का हिस्सा बनना चाहिए : विजयलक्ष्मी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। बच्चों को शपथ दिलाते वक्ता। फोटो :हरिभूमि

अशोका इंटरनेशनल स्कूल में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक करना तथा नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में इंस्पेक्टर सतीश कुमार व सतेंद्र दहिया ने सहभागिता की। इंस्पेक्टर सतीश ने उपस्थित छात्रों को सड़क सुरक्षा के महत्व के बारे में बताया और कहा कि हमें न केवल स्वयं ट्रैफिक नियमों का पालन करना चाहिए, बल्कि अपने परिवार और समुदाय को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए। यह हमारे और दूसरों के जीवन की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। विद्यालय की निदेशिका विजयलक्ष्मी ने कहा कि सड़क सुरक्षा सिर्फ नियम नहीं, बल्कि जीवनशैली का हिस्सा बनना चाहिए।

जरूरतमंद परिवार को भेंट की खाद्य सामग्री

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। जरूरतमंद परिवार को खाद्य सामग्री देते समिति पदाधिकारी। फोटो :हरिभूमि

सार्थक सेवा समिति ने गांव परनाला में एक जरूरतमंद परिवार को खाद्य सामग्री भेंट की। समिति अध्यक्ष एनएस कपूर के अनुसार पीड़ित परिवार का 24 वर्षीय जवान बेटा पिछले साढ़े पांच साल से बिस्तर पर है।

लड़के की मां भी कई बीमारियों से ग्रस्त है। परिवार का मुखिया का भी करीब 8 महीने पहले निधन हो गया। समिति ने लड़के की मां का उपचार करवाया। समिति ने जरूरतमंद परिवार को 20 किलो आटा, दालें, मसाले, बिस्कुट और फल आदि उपलब्ध करवाया। इस मौके पर एसएम पाल, हरिचंद रोझा व ज्ञान सिंह सैनी उपस्थित रहे।

कसार में करवाया योगाभ्यास

बहादुरगढ़। विद्यार्थियों को योगाभ्यास कराते जगदीश कुमार सहवाग। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। कसार गांव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग द्वारा निःशुल्क योग प्राणायाम शिविर लगाया गया। कैंप की अध्यक्षता स्कूल हैड द्वारा की गई। योगाभ्यास कार्यक्रम में शिक्षक व सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया। योगाचार्य जगदीश कुमार ने बच्चों को अष्टांग योग, देशभक्ति, प्रकृति संरक्षण, समाजसेवा, मातृ-पितृ सेवा, जल संरक्षण, प्रदूषण रोकथाम, प्लास्टिक का प्रयोग नहीं करने व शिक्षा के महत्व आदि विषयों पर जानकारी दी। इय अवसर पर दिनेश कुमार, फूलपति, राजेंद्र जून, मिनाक्षी, अंशु मुद्गिल आदि उपस्थित रहे।

शिविर में की लोगों के नाक, कान व गले की जांच

झज्जर। शनिवार को श्रीगुरु तेग बहादुर के प्रकाश पर्व पर के उपलक्ष्य में मेन बाजार स्थित पंजाबी धर्मशाला में निःशुल्क जांच शिविर का आयोजन किया गया। आप और हम धार्मिक संस्था के संस्थापक विनीत पोपली ने बताया कि धर्मशाला के शहीद मदन लाल ढींगरा हाल में आयोजित इस शिविर में डॉक्टर अभिषेक गुप्ता की टीम द्वारा लोगों के कान, नाक व गले की जांच की गई तथा जरुरतमंद लोगों को आवश्यक परामर्श भी दिया गया। पंडित कृष्ण लाल शर्मा ने बताया कि क्षेत्र में कान, नाक व गले से संबधित काफी मरीज हैं जिन्हें मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। जिसे देखते हुए शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर के शुभारंभ पर विनीत पोपली ने कहा कि गुरु तेग बहादुर एक कवि, चिंतक और साहसी योद्धा थे। उन्होंने गुरु नानक देव जी और अन्य सिख गुरुओं की पवित्रता और दिव्यता की ज्योति को आगे बढ़ाया। उन्होंने धर्म और मानवता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। इस मौके पर प्रधान कृष्ण लाल व गुलशन शर्मा सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

योग ओलंपियाड में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। प्रतियोगिता में भागीदारी करते हुए विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

झज्जर। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान माछरौली द्वारा राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में जिला स्तरीय योग ओलंपियाड का आयोजन किया गया। ओलंपियाड में डीआरयू विंग इंचार्ज राजीव देशवाल तथा डॉक्टर मुकेश कुमार ने विशेष सहयोग दिया। निर्णायक की भूमिका आचार्य बलदेव, मंजू तथा अनीता ने निभाई। प्रतियोगिता परिणामों में छठी से आठवीं कक्षा तक के लड़कों के वर्ग में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सांखौल के नीरज व लड़कियों में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जसौर खेड़ी की महक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार नौंवी से दसवीं तक के लड़कों के वर्ग में राजकीय स्कूल आसंडा के हिमांशु व लड़कियों में राजकीय कन्या विद्यालय जसौर खेड़ी की परिधि ने पहला स्थान हासिल किया। डाईट प्राध्यापक डॉक्टर मुकेश कुमार ने विद्यार्थियों को योग के महत्व से अवगत कराया।

शिविर में 60 लोगों ने किया रक्तदान

झज्जर। शिविर के दौरान उपस्थित रक्तदाता एवं चिकित्सीय टीम। फोटो :हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

कासनी गांव में शनिवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। नर्सिंग अधिकारी कविता ने बताया कि इस कैंप का आयोजन सामाजिक कार्यकर्ता रोहतास फोगाट द्वारा अपने पुत्र के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में कराया गया। उन्होंने अन्य लोगों से भी आह्वान किया कि वे जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ आदि विशेष दिनों पर इस प्रकार के आयोजन करें। कैंप के दौरान 60 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया जो स्थानीय नागरिक अस्पताल के ब्लड बैंक में जरुरतमंदों के काम आएगा। इस दौरान ब्लड सैंटर की टीम में डॉक्टर शीतल राठी, ममता, अशोक काउंसलर, मिनाक्षी और सारिका, रेड क्रॉस से दीपक, तुलसा, सुनील डागर, सचिन, सोनू, रमेश सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

अभिभावकों को परीक्षा परिणामों की जानकारी दी

■ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अभिभावक-शिक्षक मिलन कार्यक्रम जरूरी : पूनिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावक एवं शिक्षक। फोटो :हरिभूमि

शनिवार को राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में अभिभावक-शिक्षक मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन एवं समग्र विकास बारे अभिभावकों को जानकारी देना तथा उनके सुझावों को महाविद्यालय प्रशासन के साथ सांझा करना रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉक्टर सुरेंद्र कुमार पूनिया ने की। उन्होंने अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अभिभावक, शिक्षक एवं संस्थान तीनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने अभिभावकों से विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा नियमित उपस्थिति पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया। इस दौरान विभिन्न विषयों के विभागाध्यक्षों एवं प्राध्यापकों द्वारा अपने संकायों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों, परीक्षा परिणामों तथा पाठ्येतर गतिविधियों की जानकारी अभिभावकों को दी गई। स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए ऑफलाइन के अलावा ऑनलाइन मीटिंग का भी आयोजन किया गया। अभिभावकों ने पुरानी बिल्डिंग, आर्ट्स ब्लॉक, साइंस ब्लॉक, लाइब्रेरी और विभिन्न विभागों में संबंधित प्राध्यापकों से संपर्क किया और अपने सुझाव तथा विचार सांझा किए।

बहादुरगढ़। आश्रम में संत आसाराम बापू का अवतरण दिवस मनाते श्रद्धालु।

आश्रम में मनाया आसाराम का अवतरण दिवस

बहादुरगढ़। गांव बामड़ोली के नजदीक स्थित संत आसाराम आश्रम में उनका अवतरण दिवस धूमधाम से मनाया गया। असंख्य श्रद्धालु आश्रम में पहुंचे और सदा सत्य-धर्म मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। साध्वी सुशीला बहन ने बताया कि इस धरा पर संत का जन्म नहीं, बल्कि अवतरण होता है। संत महात्मा अपनी वाणी से सदा समाज को नई दिशा देते हैं। गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं। कार्यक्रम में शरबत और पुलाव का भंडारा किया गया। इसमें रवि, राकेश, नितिन भल्ला व यशपाल ने सहयोग दिया। इस अवसर पर समिति प्रवक्ता नवीन मल्होत्रा, महावीर, सुरेंद्र, प्रवीण, पूनम, सरला व आभा आदि मौजूद रहे।

विद्यार्थियों, महिलाओं को किया सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक

बहादुरगढ़। यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के लिए पुलिस द्वारा लगातार कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में बादली स्थित राजमाता अहिल्याबाई सिलाई केंद्र तथा बहादुरगढ़ में स्थित डॉ. भीमराव अंबेडकर स्कूल में कार्यक्रम आयोजित हुए। सड़क सुरक्षा सैल के प्रभारी सतीश कुमार ने इन कार्यक्रमों में विद्यार्थियों, महिलाओं को सड़क सुरक्षा के नियमों की जानकारी दी गई। साथ ही उन्हें नशे तथा साइबर क्राइम के प्रति भी जागरूक किया गया। महिला सुरक्षा पर भी जोर दिया गया। सिलाई केंद्र पर एएसआई राखी व उनकी पूरी टीम ने विस्तार से नशे के दुष्प्रभाव बताए। इस दौरान निरीक्षक सतीश कुमार ने बताया कि महिला सुरक्षा के प्रति पुलिस गंभीर है और कई अच्छी पहल की हैं। इनमें ट्रिप मॉनिटरिंग, हॉट स्पॉट पर सीसीटीवी लगाना और 112 नंबर पर शिकायत के लिए फ़ास्ट रिपॉन्ड शामिल हैं। बाहर काम के लिए जाने वाली महिलाओं के लिए ट्रिप मॉनिटरिंग एक बेहतर विकल्प है। उन्होंने सड़क दुर्घटनाओं में घायलों की सहायता के लिए सरकार द्वारा डेढ़ लाख रुपये तक के फ्री इलाज के बारे में भी जानकारी दी। वाहन चलाते समय और रोड क्रॉस करते समय हमेशा सावधानी बरतें। यातायात के नियमों का पालन करें।

बहादुरगढ़। अनाज मंडी में फसल खरीद का जायजा लेते किसान नेता। फोटो :हरिभूमि

फसलों के त्वरित उठान की मांग

बहादुरगढ़। भारतीय किसान संघ के प्रदेशाध्यक्ष सतीश छिकारा व जिलाध्यक्ष धर्मवीर गुलिया ने जिले की कई सरकारी खरीद मंडियों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने प्रशासन से फसलों का त्वरित उठान सुनिश्चित करने की मांग की। सतीश छिकारा ने बताया कि बहादुरगढ़, आसौदा व बेरी खरीद केंद्रों पर करीब 50 प्रतिशत लिफ्टिंग का कार्य पूरा हो चुका है। जबकि झज्जर व बादली में 35 फीसद के अलावा छारा व मातानहेल में करीब 15 प्रतिशत ही लिफ्टिंग हो पाई है। जिस कारण आढ़ती व किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। किसानों को अनाज का भुगतान नहीं मिला है। आढ़तियों ने बताया कि जब तक अनाज गोदामों में नहीं जाएगा, तब तक किसानों का भुगतान नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि इन समस्याओं के समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को अवगत करवाया जाएगा। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष रवींद्र धनखड़, खंड अध्यक्ष वेद सुहाग, सतीश गोच्छीव अशोक सुहाग आदि मौजूद रहे।

परीक्षा शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में आयोजित की गई

अर्चना ने जीती भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

■ चेयरपर्सन सरोज राठी ने विजेताओं को सम्मानित करते हुए गायत्री परिवार के प्रयास को सराहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। विजेता बच्चों के साथ चेयरपर्सन सरोज राठी समेत अन्य अतिथि व आयोजक।

गायत्री परिवार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में टॉप थ्री स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। सेक्टर-6 के कम्युनिटी सेंटर में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में चेयरपर्सन सरोज राठी ने विजेताओं को प्रोत्साहित किया। पार्षद ज्योति रोहिल्ला, रोहतास सिंह और डॉ. अजय जैन ने भी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत व सम्मानित किया। यह परीक्षा शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में आयोजित की गई। इसमें झज्जर जिले के 30 स्कूलों के साढ़े 5 हजार छात्रों ने भाग लिया। यह परीक्षा प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाती है। इस परीक्षा में विजया सीनियर सेकेंडरी स्कूल की 11वीं कक्षा की छात्रा अर्चना ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। चेयरपर्सन सरोज राठी ने विजेताओं को सम्मानित करते हुए कहा कि गायत्री परिवार का यह प्रयास बहुत ही सराहनीय है। बच्चों व युवा पीढ़ी को भारत की गौरवशाली भारतीय संस्कृति का पूरी तरह से ज्ञान होना चाहिए। तभी वे राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।

आयोजकों ने मुख्य अतिथि चेयरपर्सन सरोज राठी का पटका पहनाकर स्मृति चिह्न भेंट किया। आयोजकों ने बताया कि विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार डालने तथा उन्हें चरित्रवान बनाने के उद्देश्य से परीक्षा का आयोजन किया गया। ताकि वे देश के विकास में अपना उत्कृष्ट योगदान दे सकें।

जली फसलों का मुआवजा दे सरकार

बहादुरगढ़। ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के प्रदेश सचिव जयकरण मांडोठी तथा अध्यक्ष अनूप सिंह मातनहेल ने बीती रात आई तेज आंधी के कारण प्रदेश के 5 जिलों के 25 गांवों में लगभग सैकड़ों एकड़ गेहूं की फसलें तथा अवशेष जलने पर चिंता जताई। उनके अनुसार किसानों के सपने एक पल में स्वाहा हो गए। उन्होंने खेत में खड़ी फसल जलने पर 50 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजा देने की मांग की। किसान नेताओं ने कहा कि हर वर्ष प्रदेश में सैकड़ों एकड़ फसलें-फाने बिजली के तारों से निकली चिंगारियों व अन्य कारणों से जल कर राख हो जाते हैं। बीमा कंपनियां भी आग से बर्बाद हुई फसलों का मुआवजा नहीं देती। फसल बर्बाद होने पर किसान के पास आमदनी का कोई जरिया नहीं बचता और अन्नदाता कर्जजाल में फंसकर आत्महत्या तक कर लेते हैं।

सूचना

मैं, सुनील कुमार पुत्र श्री राजा राम निवासी गांव कुलासी, तहसील बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा पुत्र हर्ष मेरे कहने-सुनने से बाहर है। इसलिये मैं इसको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूं। इससे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

झज्जर। होनहार खिलाड़ी हिमांशु जाखड़। फोटोः हरिभूमि

एशियन चैंपियनशिप में हिमांशु ने जीता स्वर्ण

झज्जर। एचडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास के पूर्व छात्र हिमांशु जाखड़ ने सऊदी अरब के दम्मम में आयोजित एशियन अंडर-18 एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 67.57 मीटर भाला फेंककर भारत के लिए स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा है। एचडी ग्रुप के डायरेक्टर रमेश गुलिया ने बताया कि हिमांशु ने इस प्रतियोगिता में अद्भुत प्रदर्शन कर भारत का मान बढ़ाया है। इससे पहले भी हिमांशु ने नेशनल जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2024 में स्वर्ण पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया था। इस उपलब्धि पर एचडी ग्रुप के सचिव विशाल नेहरा, हेमंत गुलिया, प्राचार्य सतबीर सिंह ने स्टॉफ सदस्यों को बधाई देते हुए हिमांशु जाखड़ के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

चोरी करने मामले में एक अन्य आरोपी काबू

झज्जर। पुलिस की एक टीम द्वारा निर्माणाधीन मकान से चोरी करने मामले में कार्रवाई करते हुए एक अन्य आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस चौकी दुलीना प्रभारी रीना ने बताया कि आजाद निवासी दादरी तोए की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था। मामले में कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान झाबर सिंह निवासी नलखेड़ा गुरुग्राम के तौर पर की गई है। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

अखबार विक्रेता का मोबाइल ले गया शातिर

झज्जर। शहर के भगत सिंह चौक पर शनिवार की सुबह एक व्यक्ति एक अखबार विक्रेता का मोबाइल लेकर चंपत हो गया। पुलिस को दी शिकायत में अखबार वितरण का कार्य करने वाले मनोज भाटिया ने बताया कि सुबह करीब आठ बजे जब वह अपने काम से भगत सिंह पर एक जूस की दुकान पर खड़ा था तो उससे एक व्यक्ति ने किसी से कॉल करने के लिए उसका फोन मांगा। मनोज के अनुसार उसने जरुरतमंद जानकार उस व्यक्ति को अपना फोन दिया और वह व्यक्ति फोन पर किसी से बात करते हुए मौके से भाग निकला। जिसकी शिकायत पुलिस को दी गई है। जांच अधिकारी ने बताया कि जल्द आरोपी को दबोचा जाएगा।

विधायक राजेश जून ने वेदांत नगर में 200 केवीए के ट्रांसफार्मर का किया उद्घाटन

बहादुरगढ़ में सुधरेगी बिजली आपूर्ति

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

विधायक राजेश जून ने बताया कि गर्मी के सीजन को देखते हुए उन्होंने सीएम नायब सिंह सैनी से अनुरोध कर शहरी क्षेत्र के लिए बिजली के 94 ट्रांसफार्मर की क्षमता 100 केवीए से बढ़ाकर 200 केवीए कराने तथा ग्रामीण क्षेत्र के लिए 100 केवीए के 12 नए ट्रांसफार्मर मंजूर कराए हैं। विधायक राजेश जून ने शनिवार को परनाला रोड पर हरियाणा ग्रामीण बैंक के सामने 200 केवीए के ट्रांसफार्मर का रिबन काटकर उद्घाटन किया। उनके अनुसार वार्ड 18 में बिजली ओवरलोड की समस्या का स्थाई समाधान होगा। राजेश जून ने बताया कि सीएम से मिलकर उन्होंने शहरी क्षेत्र की 11 केवीए की सभी जर्जर तारों को बदलवाने, एलटी की नई केबल डालने के साथ ही ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में बिजली के ओवरलोड की समस्या का स्थाई समाधान करने की मांग की थी। सीएम के आदेश पर अब इस पर काम शुरू हो चुका है।

बहादुरगढ़। परनाला रोड पर ट्रांसफार्मर का उद्घाटन करते विधायक राजेश जून। फोटोः हरिभूमि

इस अवसर पर जेई सुनील, पूर्व पार्षद युवराज छिल्लर, सुरेंद्र तहलान, सतीश,राजेंद्र, सीटू, धर्मवीर, बिजे, राजेश दहिया, सुरेंद्र दहिया, सुमित, नरेश सैनी, नरेश दलाल, राकेश कटारिया, राम सिंह, सतीश, राजेश कौशिक व अतुल दलाल आदि मौजूद रहे।

झज्जर। खुला हुआ दानपात्र व साथ में दिखाया दे रहा पेचकसनुमा हथियार।

दानपात्र का ताला तोड़कर चौगान माता मंदिर से हजारों रुपये चुरा ले गए चोर

झज्जर। शहर के भट्ठी गेट स्थित चौगान माता मंदिर में रखे दान पात्र का ताला तोड़ चोर हजारों रुपये की राशि चुरा ले गए। मौहल्लावासी राजेश सैनी, मोनू गुर्जर, अनिल सैनी, पवन, अशोक गुर्जर, काके शर्मा आदि ने बताया कि रात के समय किसी ने चोरी की इस घटना को अंजाम दिया है। चोरों द्वारा दानपात्र का ताला तोड़ने में पेचकसनुमा हथियार का उपयोग किया गया जिसे वे वहीं छोड़ कर चले गए। अनिल ने बताया कि जनवरी माह में जब चौगान माता मंदिर का दानपात्र खोला गया था उसमें से करीब बारह हजार रुपये की राशि की निकली थी। उसके बाद यहां ताला लगा था। इस बीच होलिका पर्व व बुढ़ीमाता पूजन के समय सैंकड़ों श्रद्धालुओं द्वारा अपनी श्रद्धानुसार दान राशि चढ़ाई गई थी। ऐसे में अनुमान है कि दानपात्र में चार से पांच हजार रुपये की राशि होगी जिसे चोरों द्वारा चुरा लिया गया।

आईएमईआई नंबर से हुई युवक की शिनाख्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

- छोटूराम नगर रेलवे ट्रैक के पास मिला था 17 वर्षीय रोहन का शव

छोटूराम नगर रेलवे ट्रैक के पास ट्रेन की चपेट में आने वाले युवक की पहचान मोबाइल फोन के आईएमईआई नंबर से हुई। यूपी से परिजन बहादुरगढ़ आए तो शनिवार को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करा दिया। परिजनों के बयान पर जीआरपी ने घटना को संयोग मानकर कार्रवाई की है। मृतक की पहचान करीब 17 वर्षीय रोहन के रूप में हुई है। रोहन मूलतः यूपी के एटा इलाके का रहने वाला था। फिलहाल यहां छोटूराम नगर में अपनी बहन व जीजा के पास रह रहा था। टिकरी बॉर्डर पर सिलाई का काम सीखता था। जानकारी के अनुसार, गत 15 अप्रैल को वह काम पर जा रहा था। कानों में इयरबर्ड लगाकर म्यूजिक सुनते हुए वह रेलवे लाइन के साथ से गुजर रहा था। इसी दौरान वह ट्रेन की चपेट में आ गया। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस को रोहन के पास से मोबाइल मिला था लेकिन उसमें सिम नहीं थी। इसके बाद पुलिस ने मोबाइल के आईएमईआई नंबर के आधार पर प्रयास शुरू किए तो परिजनों से संपर्क हो सका। परिजन बहादुरगढ़ आए तो शनिवार को उनके बयान लेकर पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कराई गई।

छीना झपटी के मामले में आरोपी गिरफ्तार

बहादुरगढ़। सदर थाना पुलिस ने युवक से छीना झपटी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। उससे छीना गया मोबाइल भी बरामद कर लिया गया। वारदात यूपी के निवासी अमन के साथ हुई थी। वह फिलहाल गांव बादली में रहता है। हाल ही में अमन अपने गांव से लौटा था। अल सुबह करीब चार बजे बादली जाने के झज्जर मोड़ से वह ऑटो में सवार हुआ था। ऑटो में चालक के अलावा एक और युवक सवार था। नयागांव बाईपास पहुंचने पर ऑटो चालक ने उससे कहा कि पंक्चर हो गया है, टायर देखना। जब वह नीचे उतरा तो दूसरे युवक ने उसको पकड़ लिया। फिर चालक ने मोबाइल व नगदी छीन ली और मौके से फरार हो गए। इस शिकायत पर सदर थाने में केस दर्ज हुआ। मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने एक आरोपी सागर को गिरफ्तार कर लिया है। बादली का रहने वाला है। उससे छीना गया मोबाइल बरामद किए गया। पुलिस का कहना है कि जल्द ही दूसरे आरोपी को भी गिरफ्तार किया जाएगा।

- वारदात में शामिल दूसरे आरोपी की तलाश में जुटी पुलिस

उप डाकघर के स्थानांतरण से रोष

लाइनपार के 10 वार्डों के इकलौते उप डाकघर को शिफ्ट करने के आदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

लाइनपार की टैंकर वाली गली में पिछले 25 सालों से उप डाकघर खुला हुआ है। जिससे लाइनपार की लगभग 40 हजार जनता को सुविधा मिल रही है। लेकिन अब डाक विभाग के अंबाला मंडल द्वारा इसे शिफ्ट करने के आदेश जारी किए गए हैं। जिसे लेकर स्थानीय नागरिकों में रोष है। समाज कल्याण मंच की राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर सीमा प्रवीन दलाल ने बताया कि उप डाकघर में प्रत्येक महीने डेढ़ से दो करोड़ के बीच लेन देन होता है। लेकिन अंबाला मंडल द्वारा इसे लघु सचिवालय में स्थानांतरण का आदेश दिया गया है।

उप डाकघर शिफ्टिंग की वजह से लाइनपार के हजारों लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। आवागमन के साथ ही लाइनपार निवासियों की जेब पर भी भारी खर्च पड़ेगा। प्रोफेसर सीमा प्रवीन दलाल ने कहा कि लाइनपार की बढ़ती आबादी को देखते हुए मौजूदा भाजपा सरकार को एक नया उप डाकघर खोलना चाहिए। लेकिन इसके विपरीत लाइनपार की लगभग 40 हजार जनता से सुविधा छीनी जा रही है। उन्होंने कहा कि इसे लाइनपार से शिफ्ट किया गया तो लाइनपार निवासी लघु सचिवालय का घेराव करेंगे। इस दौरान दयानंद, राकेश, एडवोकेट राहुल, ओमप्रकाश हुड्डा, स्नेहलता, आशा, शर्मिला, नीलम, अंजना, कमला, प्रमिला, आनंद, विजय, देवेंद्र, नरेंद्र व संदीप आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। उप डाकघर शिफ्ट करने का विरोध करते लाइनपार निवासी।

28 स्कूलों ने पोर्टल पर नहीं दी जानकारी

बहादुरगढ़। सरकार गरीब और निर्धन बच्चों का भविष्य संवारने, बेहतर शिक्षा मुहैया कराने निजी स्कूलों में शिक्षा का अधिकार के तहत 25 प्रतिशत सीट आरक्षित करके योजना चला रही है। लेकिन आज भी कई स्कूल अपने यहां उपलब्ध सीटों की सूचना उपलब्ध नहीं करवा रहे है। मान्यता प्राप्त निजी स्कूलों में आरटीई एक्ट-2009 की धारा (12) (1) (सी) के तहत उज्वल पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन फार्म भरने की अंतिम तिथि 21 अप्रैल 2025 निर्धारित है। इसका विवरण विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। फार्म भरने की अंतिम तिथि के बाद अभिभावक फाइनल सब मिशन लिए आवेदन को अपने संबंधित खंड कार्यालय में जमा करवाना सुनिश्चित करें। लेकिन आरटीई के तहत कई बच्चों का एडमिशन नहीं होने से निजी स्कूलों में पढ़ने का सपना पूरा नहीं हो पाता। बहादुरगढ़ ब्लाक के 28 स्कूलों ने आरटीई की सीटें पोर्टल पर नहीं दिखाई हैं। खंड शिक्षा अधिकारी मुन्नी सहारण के अनुसार शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों के आदेश के बाद इन स्कूलों को नोटिस दिए गए हैं। इनके खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में टाइटल विजेता छात्राओं के साथ प्रिंसिपल।

प्रीति व मुस्कान बनी मिस फेयरवैल

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में बीएससी व एमएससी विभाग की छात्राओं को विदाई समारोह का आयोजन उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम में डांस समेत अन्य गतिविधियां हुई। प्रीति गुप्ता और मुस्कान ने मिस फेयरवैल का खिताब जीता। प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन में दृढ़ संकल्प, कड़ी मेहनत व लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना अति आवश्यक है। यह विदाई समारोह आपके जीवन की नई शुरुआत है। शिक्षा ग्रहण करने के साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना भी शिक्षा को सार्थकता प्रदान करता है।

राष्ट्रीय स्कूली खेलों में हिस्सा लेगी पूर्वा दलाल

बहादुरगढ़। देश को अनेक इंटरनेशनल पहलवान देने वाले गांव मांडोठी की बेटी पूर्वा दलाल 22 से 26 अप्रैल तक छत्रसाल स्टेडियम दिल्ली में होने वाले 68वें राष्ट्रीय स्कूल खेलों में हिस्सा लेगी। लगातार तीसरी बार वह कुश्ती के रिंग में अंडर 17 आयुवर्ग व 61 किलो भारवर्ग में हिस्सा लेकर पदक जीतने का प्रयास करेगी। जिला पार्षद संजय दलाल की भतीजी पूर्वा दलाल लगातार 2 वर्षों से राष्ट्रीय स्कूल खेलों में कांस्य पदक और रजत पदक जीतकर अपने गांव मांडोठी का नाम रोशन कर चुकी है। हरियाणा पुलिस में एएसआई के पद पर सेवारत पूर्वा के पिता देवेंद्र दलाल ने बताया कि रोहतक के चौधरी छोटूराम स्टेडियम में हरियाणा खेल विभाग की नर्सरी में मनदीप कोच के पास पूर्वा दलाल कुश्ती का अभ्यास करती है।

ब्लॉक स्तर पर मॉनिटरिंग टीमें सक्रिय, फसल अवशेष जलाने पर सख्त निगरानी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

गेहूं की फसल कटाई के बाद खेतों में फसल अवशेष जलाना न सिर्फ एक दंडनीय अपराध है, बल्कि पर्यावरण और जनस्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा है। फसल अवशेष जलाने की घटनाओं को रोकने व कार्रवाई करने के लिए जिला प्रशासन द्वारा ब्लॉक स्तर पर टीमें बनाई गई हैं।

इन टीमों द्वारा जिले में किसानों व आमजन को फसल अवशेष न जलाने के प्रति जागरूक किया जा रहा है व उसके भावी नुकसानों से अवगत भी करवाया जा रहा है। एसडीएम रविंद्र यादव ने बताया कि जिला स्तर से लेकर ब्लॉक स्तर तक विशेष निगरानी टीमें गठित की गई हैं जो खेतों पर निगाह बनाए हुए हैं। कहीं भी फसल अवशेष जलाने की सूचना मिलते ही तुरंत कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि खेतों में अवशेष जलाना वायु गुणवत्ता को बुरी तरह प्रभावित करता है, जिससे सांस की बीमारियों का खतरा बढ़ता है। इसके अलावा इससे मिट्टी की जैविक संरचना नष्ट होती है, जिससे कृषि उत्पादकता पर भी विपरीत असर पड़ता है।

झज्जर। फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर ब्लॉक मातनहेल में मीटिंग करते हुए तहसीलदार जयवीर सिंह। फोटोः हरिभूमि

देशव्यापी हड़ताल को सफल बनाने की तैयारी

बहादुरगढ़। एआईयूटीयूसी सहित देश की दस केंद्रीय ट्रेड यूनियनों व स्वतंत्र राष्ट्रीय फेडरेशनों के आह्वान पर आगामी 20 मई को देशव्यापी हड़ताल की जाएगी। इसके लिए कर्मचारी संगठनों ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। एआईयूटीयूसी के जिला सचिव सतीश कुमार ने कहा कि श्रमिकों-कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए इस देशव्यापी हड़ताल को सफल बनाना वक्त की जरूरत है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार देश व दुनिया के सरमायेदारों की लूट को पुख्ता करने के लिए सभी लोकतांत्रिक, वैधानिक मान्यताओं व श्रम अधिकारों को कुचल रही है। मजदूरों के ट्रेड यूनियन अधिकारों को कुचलते हुए विरोध की हर आवाज को दबाने व हड़ताल करने जैसे जनवादी अधिकारों को छीना जा रहा है। लेबर कोड लागू होने से देश के अधिकांश औद्योगिक श्रमिक श्रम-कानूनों के दायरे से बाहर हो जाएंगे और मालिक-पूंजीपतियों की सरेआम मनमर्जी चलेगी। उन्होंने कहा कि एआईयूटीयूसी से जुड़ी तमाम यूनियन आगामी 20 मई को राष्ट्रव्यापी हड़ताल में पूरी ताकत से शामिल होंगी।

झज्जर। मिठाई खिलाकर छात्रा कोमल को बधाई देते हुए डायरेक्टर जय विकास।

उपायुक्त ने खरीद एजेंसियों को उठान प्रक्रिया तेज करने के दिए निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

जिले की मंडियों में रबी सीजन के तहत सरसों व गेहूं की खरीद प्रक्रिया सुचारू रूप से जारी है। डीसी प्रदीप दहिया ने बताया कि अब तक जिले में कुल 27879 मीट्रिक टन सरसों की खरीद हो चुकी है, जबकि 32093 मीट्रिक टन सरसों की आवक दर्ज की गई है। इसमें से 24226 मीट्रिक टन सरसों की लिफ्टिंग पूरी हो चुकी है और शेष लिफ्टिंग का कार्य तेज गति से किया जा रहा है। वहीं जिले में 1 लाख 52 हजार 223 मीट्रिक टन गेहूं की आवक और एक लाख 5 हजार 827 मीट्रिक टन गेहूं की खरीद हुई है। वहीं 49 हजार 529 मीट्रिक टन गेहूं का उठान दर्ज किया गया है। उन्होंने खरीद एजेंसियों को निर्देश दिए हैं कि किसानों को उपज का समय पर भुगतान किया जाए ताकि उन्हें आर्थिक परेशानियों का सामना न करना पड़े। लिफ्टिंग कार्य में तेजी लाई जाए ताकि मंडियों में जगह की कमी न हो और नई फसल की आवक बाधित न हो।

मंडियों में शनिवार को कम आई फसल

बहादुरगढ़। अनाज मंडियों में सरसों और गेहूं की खरीद जारी है। हालांकि शनिवार को दोनों ही मंडियों में दोनों फसल कम आई। बहादुरगढ़ की मंडी में शनिवार को गेहूं की फसल के तीन गेट पास कटे। कुल 148 क्विंटल फसल आई और 191 क्विंटल सरकारी खरीद हुई। अब तक इस मंडी में 6487 क्विंटल सरकारी खरीद हो चुकी है और 97 प्रतिशत उठान हो चुका है। वहीं आसौदा की अनाज मंडी में 46 गेट पास कटने के साथ 2827 क्विंटल गेहूं आया और 4279 क्विंटल सरकारी खरीद हुई। अब तक यहां 72 हजार 810 क्विंटल गेहूं खरीदा जा चुका है। जबकि उठान 48 फीसद हुआ है। सरसों की फसल के लिए सात गेट पास कटे और 142 क्विंटल फसल आई। मात्र 82 क्विंटल खरीद हुई। अब तक यहां 8621 क्विंटल सरसों की खरीद हो चुकी है।

झज्जर। अनाज मंडी परिसर में लगी गेहूं की ढेरियां। फोटोः हरिभूमि

पेस ग्रुप की कोमल ने आईआईटी मेन्स में हासिल किए 99.8 परसेंटाइल

18 ने एडवांस के लिए क्वालीफाई किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

शनिवार को आए परीक्षा परिणामों में पेस संस्थान के 18 विद्यार्थियों ने आईआईटी एडवांस के लिए क्वालिफाई किया।

पेस ग्रुप के डायरेक्टर जय विकास ने बताया कि उनके संस्थान की छात्रा कोमल ने कैमिस्ट्री में 99.8 परसेंटाइल हासिल कर संस्थान का नाम रोशन किया है। इनके अलावा हर्ष पूनिया ने 98.6 परसेंटाइल, हरित कादियान ने 97.4 परसेंटाइल, अंशुल कादियान ने 97 परसेंटाइल, हर्ष जांगड़ा ने 98 परसेंटाइल, कपिल यादव ने 95 परसेंटाइल, सिमरन ने 96 परसेंटाइल, महक ने 94 परसेंटाइल और पारुल ने 93 परसेंटाइल के साथ परीक्षा पास की। इस उपलब्धि पर पेस ग्रुप के चेयरमैन युद्धवीर, मैनेजिंग डायरेक्टर संदीप, हरीश और सुमित चावला ने आईआईटी विशेषज्ञ विशाल, विकास, रविंद्र, जगदीश, राज गुप्ता, सुमित व आकाश की सराहना करते हुए उत्तीर्ण विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साइज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/-
10×8 सें.मी		रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साइज पर मान्य। अन्य किसी साइज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

विशेष: पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल

कवर स्टोरी
डॉ. माजिद अलीम

बिगड़ते पर्यावरण, बदलते जलवायु के कारण धरती के बढ़ते तापमान यानी ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव दुनिया भर में प्राकृतिक आपदाओं के रूप में दिखने लगे हैं। इसका असर अब हमारी हेल्थ पर भी पड़ने लगा है। कई तरह की शारीरिक और मानसिक समस्याओं से लोग ग्रस्त हो रहे हैं। इनसे कुछ हद तक बचाव के लिए जरूरी सावधानी बरतने के साथ यहां बताई जा रही बातों पर अमल करना जरूरी है।

हमारी हेल्थ को बिगाड़ रही ग्लोबल वार्मिंग

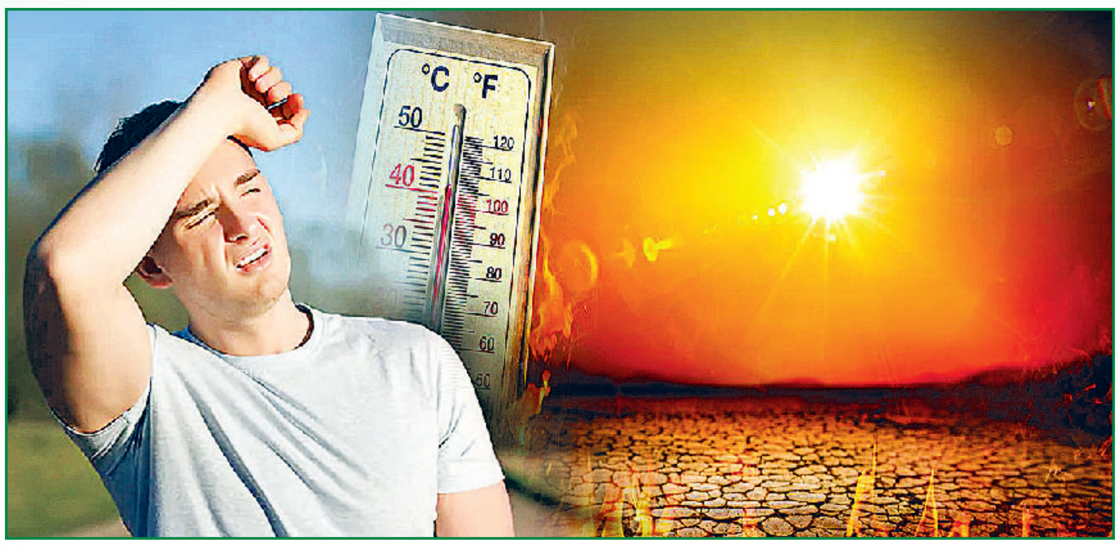

जलवायु, मौसम और बारिश के पैटर्न को ही नहीं बल्कि ग्लोबल वार्मिंग, हमारी हेल्थ और फिटनेस पर भी अब तेजी से असर डाल रही है। ग्लोबल वार्मिंग ने हमारे पर्यावरण को जिस तरह से प्रभावित किया है, उसे तो हम कई सालों पहले से जान रहे हैं, लेकिन अब हमें अपनी हेल्थ पर भी इसके असर दिखने लगे हैं।

बढ़ते हीट स्ट्रोक

हम सब जानते हैं कि ज्यादा तापमान में व्यायाम करने से शरीर में डिहाइड्रेशन होने और हीट स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है, इन दिनों ऐसा ही हो रहा है। पिछले दो सालों में यूरोप और अमेरिका में सबसे ज्यादा डिहाइड्रेशन और हीट स्ट्रोक के मामले सामने आए हैं। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में, जहां पहले कभी हीट वेव नहीं चला करती थी। पेरिस, न्यूयॉर्क और लंदन में भी हाल के सालों में साइकिलिंग के दौरान लोगों में हीट स्ट्रोक के केसेस 5 से 15 फीसदी तक बढ़े हैं। न्यूयॉर्क में 2023 और 2024 में हीट स्ट्रोक की जितनी घटनाएं सामने आई हैं, पिछली सदी में उसके 10वें हिस्से के बराबर भी नहीं आई थीं। जाहिर है, ये बढ़ते तापमान का नतीजा है। यही वजह है कि यूरोप और अमेरिका के ज्यादातर शहरों में अब खासतौर पर जिम की नई गाइडलाइन में एक्सरसाइज के लिए शाम और सुबह को प्राथमिकता दी जा रही है।

बिगड़ती एयर क्वालिटी

दिल्ली और मुंबई समेत देश के कई मेट्रो शहरों में पिछले तीन सालों में वायु प्रदूषण बेहद खराब स्तर का हो गया है। दिल्ली में तो प्रतिवर्ष हवा की खराब गुणवत्ता के कारण इससे बीमार पड़ने और मरने वाले लोगों की संख्या में 10 हजार से 15 हजार के बीच इजाफा हुआ है। दिल्ली में पिछले पांच सालों से हवा औसतन साल के 300 दिन सामान्य से

बहुत ज्यादा खराब रहती है। इसीलिए अब दिल्ली में स्वास्थ्य विशेषज्ञ, खासकर फिटनेस के जानकार, बूढ़े लोगों को सुबह के समय घर से बाहर घूमने जाने की सलाह नहीं देते हैं, क्योंकि दिल्ली में हवा इतनी प्रदूषित है कि घूमने से जो फायदे हो सकते हैं, उससे कहीं ज्यादा हेल्थ के लिए नुकसान होने की आशंका रहती है। दिल्ली जैसे वायु प्रदूषण से ग्रस्त शहर में सुबह के समय दौड़ने या खुली हवा में योग करने से सांस संबंधी बीमारियां बढ़ जाने का खतरा पैदा हो गया है। जिस तरह से ऐसे महानगरों की हवा प्रदूषित है, उससे फेफड़ों की क्षमता प्रभावित हो रही है। यही वजह है कि ऐसे प्रदूषित शहरों में कार्डियो वर्कआउट्स कम प्रभावी हो रहे हैं।

बिगड़ती मानसिक सेहत

ग्लोबल वार्मिंग के कारण सिर्फ शारीरिक परेशानियां ही नहीं बढ़ीं बल्कि मानसिक तनाव भी बहुत ज्यादा बढ़ गया है। हमारे

व्यायाम की आदतें बदल गई हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण बढ़ता हीट स्ट्रोक और तनाव हमारे मानसिक स्वास्थ्य को लगातार प्रभावित कर रहा है। दरअसल, इस ग्लोबल वार्मिंग का असर हमारी फसलों के ऊपर और हमारे पोषण की गुणवत्ता पर भी पड़ा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण कुछ फसलें कम पैदा हो रही हैं, खासकर प्रोटीन और मिनरल्स से भरपूर फ्रूट्स का उत्पादन घटा है और इनकी कीमतें बहुत बढ़ गई हैं। महंगे होने के कारण लोग आसानी से इन्हें नहीं खा पा रहे हैं। इससे भी हमारी मेंटल फिटनेस पर असर पड़ रहा है। ऐसे में स्वस्थ रहने के लिए हमें अपनी लाइफस्टाइल और डाइट का पूरा ध्यान रखना होगा। *

स्वस्थ रहने के लिए इन बातों पर करें अमल

वैज्ञानिक पिछले तीन दशकों से दुनिया भर के लोगों को आगाह कर रहे हैं कि प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है। बावजूद इसके ग्लोबल वार्मिंग कम करने के लिए जितने उपाय किए जाने चाहिए, वो नहीं हो रहे हैं। इसलिए स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि प्रदूषण का संकट इतना गहरा हो गया है कि अब इस स्थिति में रातों-रात सुधार नहीं हो सकता है। कहने का मतलब यह है कि अब हमें इसी खराब मौसम और ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के साथ जीना है। ऐसे में ग्लोबल वार्मिंग के रहते हुए अपनी सेहत और फिटनेस का ध्यान रखने के लिए कुछ बातों पर अमल करना होगा-

- व्यायाम हमेशा सुबह या शाम के समय ही करें। जब तापमान और वायु गुणवत्ता दोनों बेहतर हों।
- आउटडोर एक्सरसाइज से बचें, क्योंकि इन दिनों प्रदूषण की स्थिति काफी बिगड़ी हुई है और ग्लोबल वार्मिंग से मिलकर यह प्रदूषण और भी नुकसान करता है। इसलिए घर के भीतर या जिम में ही व्यायाम को प्राथमिकता दें।
- गर्मी वाले महीने अप्रैल, मई, जून ही नहीं जुलाई और अगस्त के महीने तक भी व्यायाम करते समय सतर्क रहें। पर्याप्त मात्रा में पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स का सेवन करें।
- घर से बाहर निकलते समय हमेशा पॉल्यूशन मास्क जरूर लगाएं।
- घर और ऑफिस के भीतर एयर प्यूरीफायर का उपयोग करें।
- अपने घर, गार्डन या आस-पास के पार्क में पेड़ लगाने के साथ पर्यावरण को बेहतर बनाने की दिशा में भी छोटे-छोटे कदम उठाएं।
- पिछले एक दशक से लगातार वैज्ञानिकों की चेतावनियों के बावजूद प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग और अंधाधुंध विकास की भाग-दौड़ में हमारे इर्द-गिर्द की हवा, पानी, मिट्टी, खाद्य सामग्रियां, सब कुछ प्रदूषित, संक्रमित या ग्लोबल वार्मिंग के कारण असामान्य हो गई हैं। ऐसे में व्यायाम करने, खान-पान से लेकर जीवनशैली के तौर-तरीकों पर सजगता बरतनी होगी।

आत्मप्रेरणा
राजयोगी बीके निकुंज जी

यह जानते हुए भी कि धरती के संसाधनों का अति दोहन करने से हम सभी का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा, हम सचेत नहीं हो रहे हैं। अपनी धरती को बचाए रखने के लिए बिना देर किए हम सभी को प्रकृति संरक्षण के प्रभावी प्रयास करने होंगे।

पुकार रही है प्रकृति बचा लें अपनी धरती

सदियों से प्रकृति और यह धरती, कवियों और लेखकों के लिए आराधना और प्रशंसा का विषय रही है। इसीलिए जब हम कश्मीर की सुंदर घाटी को या फिर हिमालय से बहती हुई पावन नदी गंगा के प्रवाह को देखते हैं, तब मन ही मन हमें इस बात का अहसास होने लगता है कि सचमुच ही हम मनुष्य, शक्तिशाली प्रकृति की सामर्थ्य के समक्ष कितने तुच्छ और शक्तिहीन हैं! हम सभी इस तथ्य से परिचित हैं कि धरती मां, हमारा पालन-पोषण ठीक ऐसे ही करती है, जैसे कोई माता अपनी संतान का। आहार जुटाने से लेकर जीवन के लिए जरूरी अनेक कार्य प्रकृति पूरी तत्परता के साथ निभाती है। मान लीजिए, यदि वह अपने इस नित्य कार्य को करना बंद कर दे, तो फिर हम मनुष्यों का क्या हाल होगा, इसकी कल्पना भी हम नहीं कर सकते हैं।

बढ़ रही प्राकृतिक आपदाएं: पिछले डेढ़-दो दशक में समस्त संसार में हुई प्राकृतिक आपदाओं की घटनाओ को देखते हुए इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता हैं कि प्रकृति वर्तमान में हम मनुष्यों से बड़ी रुष्ट है और अगर हमने अपने आप में परिवर्तन नहीं किया तो उसके भयावह परिणाम सामने आ सकते हैं। हाल ही में भारत के कुछ पर्वतीय क्षेत्रों में बादल फटने की घटनाओं और भारी

बारिश के कारण स्थानीय लोगों को अपना घर छोड़कर सरकारी टेंटो में जाकर रहने की नौबत आई, जिसके चलते उनके मन में प्रकृति के प्रति शिकायत का भाव देखा गया। लेकिन हम इंसान अकसर यह भूल जाते हैं कि प्राकृतिक आपदाओं और धरती की बिगड़ती मौजूदा हालत के जिम्मेदार हम खुद ही हैं।

रोकनी होगी वृक्षों की कटाई: पर्यावरण विशेषज्ञों के मतानुसार बादल फटने की घटना का गहरा संबंध वन की अनियंत्रित कटाई से होता है, जिसे साधारण भाषा में वनोन्मूलन या डिफॉरेस्टेशन कहते हैं। वनस्पति विशेषज्ञों द्वारा किए गए अनुसंधान से यह सिद्ध हुआ है कि पहाड़ी इलाकों में आए दिन होने वाली बादल फटने की घटनाओं और उससे होने वाली तबाही को कम करने के लिए समुद्र तल से 4000 से 8000 फुट की ऊंचाई पर अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाए जाने चाहिए। परंतु दुर्भाग्यवश पर्यटन में सुधार करने के लिए हम वृक्ष लगाने के बजाय, वृक्षों को काट रहे हैं और जंगलों का नाश कर रहे हैं, जिसका सीधा असर प्रति वर्ष नदी तटीय इलाकों में बसे गांव या शहरों में होने वाली बाढ़ के रूप में हमें देखने को मिलता है।

हम सब करें प्रकृति संरक्षण: श्रीमद भगवदगीता के तीसरे अध्याय में कहा गया है-

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥

अर्थात तुम सब यज्ञ कर्मों द्वारा देवताओं की उन्नति करो और वे देवता तुम लोगों की उन्नति करेंगे। अब यदि आज के समय में इस श्लोक का भावार्थ किया जाए तो देवताओं को प्रसन्न रखने का अभिप्राय यहां प्रकृति को संतुलित एवं व्यवस्थित रखने से भी है। ऐसा इसलिए क्योंकि प्रकृति, दैवीय शक्तियों की क्रीड़ा भूमि है और उसके अनुदानों से विश्व-वसुंधरा पुष्पित, पल्लवित होती तथा समुन्नत बनती है। इसलिए हम सभी मनुष्यों के लिए यह अनिवार्य है कि अपने कल्याणार्थ प्रकृति के साथ विवेकसम्मत व्यवहार करें और उसके आशीर्वाद का पात्र बनें न कि श्राप का। अच्छे कर्म का फल अच्छा मिलता हैं और बुरे का बुरा, यह सर्वविदित है। कहने को तो यह सिद्धांत पुराना पड़ गया है किंतु इसके पीछे छुपा तथ्य सनातन है और यह सिद्धांत सृष्टि के कण-कण में आज भी विद्यमान है। अतः यदि हम धरती मां के साथ सम्मानजनक व्यवहार करेंगे तो हमें उतना ही प्यार और स्नेह उनसे प्राप्त होगा। लेकिन अगर हम उसके संसाधनों का दुरुपयोग करना जारी रखेंगे, तो फिर हमें भूकंप, बाढ़, अकाल, भूस्खलन जैसे प्राकृतिक प्रकोपों का सामना करना ही पड़ेगा। *

संकट
नरेंद्र शर्मा

अब समय आ गया है कि हम सब पृथ्वी की बदतर होती स्थिति को लेकर केवल चिंता न प्रकट करें, उसे सुधारने के लिए कारगर कदम भी उठाएं।

चिंता जताने से नहीं सुधरेगी पृथ्वी की सेहत

हर साल 22 अप्रैल पृथ्वी दिवस के अवसर पर पूरी दुनिया के 190 से ज्यादा देश मिलकर पृथ्वी की दिनों-दिन बिगड़ती सेहत पर चिंता व्यक्त करते हैं, इसे सुधारने का आह्वान करते हैं, नई-नई नीतियां बनाते हैं, लेकिन नतीजा न केवल वही रहता है बल्कि लगातार धीरे-धीरे पृथ्वी की सेहत बद से बदतर होती जा रही है।

बीत गई आधी सदी: पहली बार 22 अप्रैल 1970 को अमेरिका में दुनिया के कई पर्यावरणविद जुटे थे और उन्होंने चेताया था कि अगर औद्योगिकीकरण के चलते हमारी नदियां इसी तरह कचरे से पटती रहीं, हवा में जहर इसी तरह घुलता रहा, पेड़ कटते रहे और ग्लेशियरों की बर्फ पिघलती रही, तो जल्द ही यह धरती इंसानों के रहने लायक नहीं बचेगी। जब वैज्ञानिकों ने पहली बार यह सब चेतावनी के तौर पर ऊंचे स्वर में कहा तो एक स्वाभाविक चिंता बनी और दुनिया की करीब-करीब हर सरकार ने पृथ्वी को बचाने के लिए संकल्प लिया। लेकिन इस सबके बाद भी नतीजा सकारात्मक बिल्कुल नहीं रहा। 1970 में वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की सेहत को जिस तरह बिगड़ते हुए पाया था, इन 55 सालों में एक बार भी स्थिति उससे बेहतर नहीं हुई, लगातार पृथ्वी की सेहत खराब ही होती जा रही है।

बातें नहीं लेना होगा एक्शन: इस साल पृथ्वी दिवस पर पृथ्वी को बचाने के लिए विशेषज्ञों ने जिस थीम का आह्वान किया है, वह है-हमारी शक्ति, हमारा ग्रह। हमारी शक्ति से आशय सरकार, उद्योग या वैज्ञानिकों की शक्ति नहीं है बल्कि इसका भाव यह है कि ये हमारी आदतें, हमारा आचरण और ये हमारा उपभोग ही है, जो अंततः हमारी पृथ्वी की सेहत पर असर डालता है। कुल मिलाकर यह कि यह हमारी चुनाव की शक्ति है कि हमें वास्तव में पृथ्वी को बचाने के लिए कुछ करना है या बड़ी-बड़ी बातें ही करनी हैं। चूंकि पृथ्वी एक भौगोलिक क्षेत्र भर नहीं है, यह एक जीवंत ग्रह है, इसलिए अगर हमने पृथ्वी को बचाने के लिए किसी जीवित इंसान की तरह ईमानदारी से कोशिश नहीं किया तो जल्द ही वह समय आएगा, जब हमारी सारी समझदारी और सारी जानकारी के बावजूद पृथ्वी की हालत सुधरेगी नहीं।

सबसे बड़ा खतरा प्लास्टिक: आज की तारीख में धरती को सबसे ज्यादा खतरा प्लास्टिक से है। प्लास्टिक के खतरे को हम कई दशकों से जानते हैं और लगातार सरकारें प्लास्टिक के कम से कम इस्तेमाल का आह्वान करती रही हैं। भारत जैसे देश में तो हाल के कुछ सालों में कितनी ही बार प्लास्टिक के इस्तेमाल में तरह-तरह के प्रतिबंध लगे हैं, लेकिन हैरानी की बात यह है कि प्रकट रूप में प्लास्टिक से बचने के लिए दिन-रात किए जा रहे आह्वानों, प्रतिबंधों और नीतियों के बावजूद प्लास्टिक का इस्तेमाल घटने की बजाय दिन-पर-दिन बढ़ता ही जा रहा है। आज हर साल 40 करोड़ टन से भी ज्यादा प्लास्टिक का उत्पादन होता है और इसमें से 50 फीसदी सिंगल यूज प्लास्टिक होता है, जो पृथ्वी की सेहत के लिए सबसे खतरनाक है। धरती की तो छोड़िए अब समुद्र भी इस प्लास्टिक से पट गया है। सिर्फ जमीन और समुद्र ही नहीं दुनिया के किसी देश में शायद ही ऐसा खान-पान बचा हो, जिसमें बड़े पैमाने पर माइक्रोप्लास्टिक के टुकड़े घुल-मिल न गए हों। यहां तक कि नवजात शिशुओं के रक्त में भी प्लास्टिक के कण पाए गए हैं। आखिर ये स्थितियां किस बात की सूचक हैं? शायद इसी बात की कि हम चिंता तो खूब प्रकट करते हैं, आह्वान भी खूब करते हैं, लेकिन अमल बिल्कुल नहीं करते। ऐसे में भला पृथ्वी की सेहत सुधरेगी भी तो कैसे?

हवा-पानी सब प्रदूषित: देश की राजधानी दिल्ली समेत देश के कई महानगर अकसर भयावह वायु प्रदूषण से ग्रसित रहते हैं। यही हाल हमारी नदियों का भी है। गंगा, यमुना जैसी जीवनदायिनी नदियां, पर्यावरणविदों की दिन-रात जताई जा रही चिंता के बावजूद प्रदूषण से दम तोड़ रही हैं। पहले तो इनमें औद्योगिक ईकाइयों का गंदा पानी ही शामिल होकर इन्हें जहरीला बना रहा था, लेकिन अब तो हमारी इन नदियों में भी प्लास्टिक एक बड़ा खतरा बन गया है। जिस तरह से लगातार हिमालयी ग्लेशियर पिघल रहे हैं, उससे यह स्थिति कभी पैदा हो सकती है कि गंगा नदी सूख जाए या कि मौसमी नदी बन जाए।

हमारा संकट यह है कि हम एक तरफ जहां पृथ्वी के बिगड़ते स्वास्थ्य को देखकर चिंतित हो रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ हम अपने उपभोग का तौर-तरीका नहीं बदल रहे। अगर हमने अपने जीवनशैली से जरा भी समझौता नहीं किया तो पृथ्वी की सेहत को लेकर चाहे जितनी चिंता प्रकट करें, इसे बचा नहीं सकते। *

गजल
हबीब कैफी

क्या हुआ जो बात करना हमको आया ही नहीं
फिर भी चेहरे पर कोई चेहरा लगाया ही नहीं

आप तो क्या चीज हैं पत्थर पिघल जाते जनाब
गीत कोई दिल से अब तक हमने गाया ही नहीं

मुस्कुराया वो मेरे कुछ पूछने पर इस तरह
कुछ बताया भी नहीं लेकिन छुपाया ही नहीं

रोज आता है यहां वो रात के पिछले पहर
नींद से लेकिन कभी उसने जगाया ही नहीं

क्या डराएगा कोई साया हमें 'कैफी' यहां
उसके हम बंदे हैं साहिब जिसका साया ही नहीं

व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय

आज तो गजब ही हो गया। मास्साब के सारे उसूल टूट गए। मजा मिलने लग जाए, तो उसूल चिटक ही जाते हैं।

मास्साब का डबल मजा

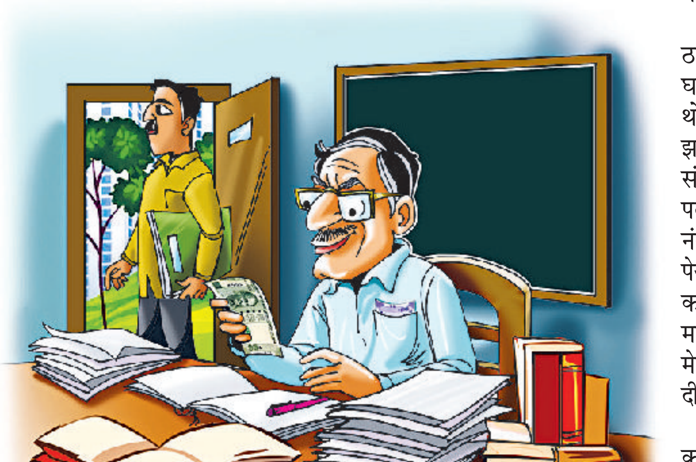

मास्साब वार्षिक परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं का कई दिनों से केंद्रीय कक्ष में सामूहिक मूल्यांकन कर रहे थे। लेकिन आज की कॉपी की जंचाई में मास्साब को बहुत मजा आया। वह प्रायः उत्तर पुस्तिकाएं पढ़कर नंबर नहीं दिया करते थे। उनके अपने कुछेक प्रिंसिपल्स थे। इनको मास्साब ने अपने ही विद्यालय के पूर्व प्रिंसिपल से उत्तराधिकार में ग्रहण किया था। मगर आज तो गजब ही हो गया। मास्साब के सारे उसूल टूट गए। मजा मिलने लग जाए, तो उसूल चिटक ही जाते हैं।

मास्साब कॉपियां जांचने बैठे। पहली उत्तर पुस्तिका खोली, तो उनकी आंखें ऐसी फैलनी शुरू हुईं कि वे सिकुड़ने का नाम ही नहीं ले रही थीं। मास्साब ने जेब से चश्मा निकाला। किसी तरह अपनी विजन की व्यापकता को कंट्रोल किया। दरअसल, मास्साब चक्षु बंद करके नंबरादि दिया करते थे, इसीलिए वह कॉपी जांचते टाइम चश्मा नहीं लगाते थे।

पहली ही उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ इतना मनमोहक! किसी फिल्मी पत्रिका के कलर्ड कवर को मात देता हुआ एक रंगीन हार्ट का चित्र अंकित था। मास्साब ने चश्मा नहीं उतारा। परीक्षार्थी की हैंड राइटिंग तो और भी ब्यूटीफुल थी। अंकित था, 'हे अंकस्वामी, मैंने आज अपना दिल खोलकर आपके सामने फैला दिया है। मेरा आगामी फ्यूचर आपके हाथ है। उबार लीजिए, चाहे डुबा दीजिए।' साथ में एक सौ रुपए का करारा नोट नत्थी था। मास्साब ने गहरी सांस ली। चतुर्दिक देखा। सहकर्मी परीक्षक परीक्षार्थियों का भविष्य दुरुस्त करने में तल्लीन थे। मास्साब की नीयत का मोर, मूल्यांकन कक्ष के जंगल में नाच उठा। जैसा कि होता है, जंगल में मोर नाचा, किसने देखा? सो किसी ने नहीं देखा। सौ का वह नोट मोरपंख बनकर मास्साब की जेब में घुस गया। आज की कॉपी जंचाई में मास्साब को सचमुच बड़ा मजा आया।

अगली तीन-चार कॉपियां ठीक-ठाक बच्चों की थीं। मास्साब को वे सब घामड़ लगे और महाबोर भी। उन्होंने थोड़े मार्क्स दे मारे। किंतु पांचवीं कॉपी झन्नाटेदार थी। उसमें लिखा हुआ था, 'हे संकटमोचक सर या मैडम (क्योंकि मुझे पता नहीं है), जब आप मेरे को भरपूर नंबरों से पास कर दीजिएगा, तब लास्ट पेज खोलिएगा। आपको पांच सौ रुपए का एक नोट दिखेगा। मैंने उत्तीर्ण होने की मनौती मान रखी है। आप भगवान को मेरी तरफ से प्रसाद जरूर चढ़ा दीजिएगा।'

मास्साब ने तत्काल उस विद्यार्थी की कॉपी में पूर्ण लब्धांक टांके। मंदिर कौन जाए? उन्होंने चपरासी को बुलाया और बगल के हलवाई के यहां से दो सौ रुपए के लड्डू मंगवाए। सहयोगी शिक्षक-शिक्षिकाओं के मध्य मिष्टान्न वितरण कराया। बाकी के लडडू घर के लिए अपने बैग के हवाले किए। आज मास्साब का मजा सचमुच डबल हो चुका था। *

लघुकथा / यशोधरा भटनागर

मैं चाहता हूं

काका, खाना तैयार हो गया? सभी मेहमानों को पहले सॉफ्ट ड्रिंक्स और स्नैक्स दीजिएगा। मेहमान भी आते ही होंगे।' हाथ में ब्रेसलेट को लॉक करते हुए मैंने काका से पूछा।

'हओ बहू जी! बस अब्बई लगाए दे रहे।' लॉन का चक्कर लगा कर सारी तैयारियां देख लीं। रोशनी की झिलमिलाती लड़ियां भी सभी अपने-अपने स्थान पर जगमगा रही थीं। बेटे बंटू के जन्मदिन को हम खूब धूमधाम से मनाना चाहते हैं आखिर वह हमारा इकलौता बेटा है। अपने दादी-दादी सबका बहुत दुलारा है।

उत्सव की सारी तैयारियां हो चुकी थीं। मम्मी जी, पापा जी, रवि सभी रेडी होकर लॉन में लगी चेयर्स पर बैठे अपने-अपने मोबाइल फोन में व्यस्त थे। मुझे भी ऑफिस एक अर्जेंट मेल करना है। सुबह से समय ही नहीं मिला। जल्दी से वह काम भी कर लेती हूं। बंटू को भी रेडी कर दिया है। मेहमानों के आने तक और कोई काम भी नहीं है।

तभी मेरा ध्यान बंटू की ओर गया, झपझपाती लाइटों से चमचमाते पारिजात के पेड़ के नीचे गुमसुम बैठा हुआ है। 'बंटू बेटा, व्हाट हैप्पंड? टुडे इज योर बर्थ डे! सो एंज्वॉय बच्चे।' बंटू के गालों को प्यार से थपथपाते हुए मैंने कहा।

'किसके साथ?' सूनी आंखों से मुझे देखते हुए वह धीरे से बोला।

'ओह बंटू! मुझे बताओ आप क्या चाहते हो?' उसे मनाने के अंदाज में मैंने उससे पूछा। 'मम्मी मैं मोबाइल फोन बनना चाहता हूं। भगवान जी मुझे मोबाइल फोन बना देते तो मैं...।' 'व्हाट..!' मैं सिर से पैर तक झनझना उठी। *

परंपरा / शिखर चंद जैन

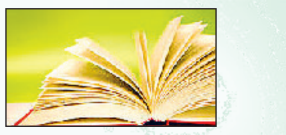

विशेषः विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल

दुनिया भर के अनेक लोग पुस्तकें पढ़ने का शौक रखते हैं। पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न देशों में कुछ अनोखी और आकर्षक साहित्यिक परंपराएं निभाई जाती हैं। आइए जानते हैं कुछ ऐसी परंपराओं के बारे में।

दुनिया भर में मशहूर पुस्तक प्रेम की अनोखी परंपराएं

क्रास्नोयार्स्क पुस्तक संस्कृति मेला रूस

अपनी अनोखी पुस्तक-संबंधी प्रदर्शनियों और प्रतिष्ठानों के लिए प्रसिद्ध रूस का यह मेला साइबेरिया की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है और विभिन्न साहित्यिक विधाओं के अन्वेषण को प्रोत्साहित करता है। साइबेरिया के आश्चर्यजनक परिदृश्यों के बीच स्थित, रूस का क्रास्नोयार्स्क पुस्तक संस्कृति मेला, साहित्यिक समारोहों की दुनिया में बहुत महत्व रखता है। यह मेला, न केवल लिखित शब्दों का उत्सव मनाता है, बल्कि क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भी संजोता है। रूसी साहित्य, स्वदेशी कहानी और अंतरराष्ट्रीय प्रभावों के अनूठे मिश्रण के साथ यह मेला पुस्तक प्रेमियों और संस्कृतिकर्मियों के लिए एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है। विविध पुस्तक स्टालों से भरे व्यस्त बाजारों से लेकर साहित्यिक परिदृश्य पर गहन विचार-विमर्श तक, आगंतुकों को शब्दों की दुनिया में एक गहन यात्रा का आनंद मिलता है। *

जोला बोका फ्लड आइसलैंड

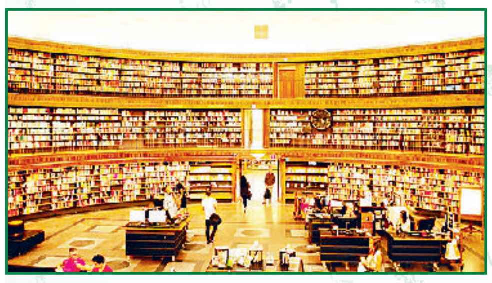

आइसलैंड के अधिकांश लोग नियमित रूप से किताबें पढ़ते हैं। वे किताबें लिखने में भी आगे रहते हैं। जोला बोका फ्लड के नाम से मशहूर 'क्रिसमस बुक फ्लड' समारोह साल के अंत में एक हफ्ते तक आयोजित होता है, जिसमें आइसलैंड के नागरिक एक-दूसरे को किताबें उपहार में देते हैं। अकसर क्रिसमस की पूर्व संध्या पर, इन पुस्तकों का आदान-प्रदान किया जाता है और फिर तुरंत पढ़ा जाता है। जोला बोका फ्लड, वाक्यांश खरीदी गई नई पुस्तकों की 'बाढ़' को भी संदर्भित करता है। आइसलैंडवासी कहते हैं, 'एड गंगा मेड बोक आई मैगनम', जिसका भावार्थ होता है 'हर किसी के अंदर एक किताब होती है।' *

पढ़ने के साथ आनंद के पल स्वीडन

स्वीडिश लोग आराम के समय किताबें पढ़ना सबसे अधिक पसंद करते हैं। खासतौर पर सर्दियों की लंबी, अंधेरी रातों में स्वीडिश लोग गर्म पेय के साथ कंबल के नीचे दुबके हुए अपनी पसंदीदा किताब पढ़ना खूब पसंद करते हैं। स्वीडन में स्थित अधिकतर पुस्तकालय, अकसर रीडिंग नाइट्स की मेजबानी करते हैं, जिससे सामुदायिक जुड़ाव और साहित्य के प्रति साझा प्रेम को बढ़ावा मिलता है। *

पाठकों की पुस्तक परियां इटली

इटली निवासी अपनी पढ़ी हुई किसी किताब को अपने पास डंप नहीं करते हैं। जब वे अपनी खरीदी हुई पुस्तक पढ़कर समाप्त करते हैं तो पुस्तक को वापस शेल्फ पर रखने के बजाय, वे इसे विशेष स्टिकर और हरा रिबन लगाकर किसी और के लिए सार्वजनिक स्थल पर छोड़ देते हैं। इन किताबों को ट्रेन स्टेशनों, कॉफी की दुकानों, पार्क की बेंचों और अन्य जगहों पर छोड़ दिया जाता है ताकि कोई दूसरा पाठक इन्हें पाकर पढ़ सके। इन्हें पुस्तक परियां कहते हैं। कुछ लोग अपनी किताबों को पार्क की बेंचों के नीचे, स्टोर के साइन बोर्ड के पीछे या बस स्टेशनों में छिपाकर रखना पसंद करते हैं। ताकि उस किताब का दीवाना कोई पाठक उसे पाकर पढ़ सके। पढ़ने के बाद वह फिर से रिबन को लपेटकर अन्य पाठक के लिए दूसरी जगह रख सकता है या पुस्तक को अपने निजी पुस्तकालय के लिए सहेज सकता है। *

स्टोन सूप हैप्पी रीडिंग एलायंस चीन

चीनी प्राथमिक विद्यालयों में बेहतर साहित्यिक निर्देश और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए 2007 में स्थापित, स्टोन सूप हैप्पी रीडिंग एलायंस का मिशन है 'पढ़ने को वैसा बनाना है जैसा कि होना चाहिए- खुशहाल, मुफ्त और स्वैच्छिक।' छात्र अपनी पसंद की विशिष्ट सामग्री चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। किताबों की गाड़ियां कक्षाओं

से पुस्तकालयों तक लाई जाती हैं और शिक्षक अकसर अपने छात्रों को रोचक पुस्तकें खुद पढ़कर सुनाते हैं। इच्छुक छात्र उन किताबों से प्रेरित होकर नाटक या नाटकीय व्याख्याएं लिखते हैं और उन पर अभिनय भी करते हैं, जो उन्होंने पढ़ी होती है। *

नैनोविमो, संयुक्त राज्य अमेरिका

नैनोविमो आयोजन के तहत लोगों को 30 दिनों में 50,000 शब्दों का उपन्यास लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। 1999 में एक पर्सनल डेवलपमेंट चैलेंज के रूप में शुरू हुआ यह कार्यक्रम इंटरनेट पर एक पॉपुलर इवेंट बन गया है। आधिकारिक तौर पर नैनोविमो, एक गैर-लाभकारी संगठन है, जो पूरे देश और दुनिया के लेखकों को मजेदार कार्यशालाओं, युक्तियों और ऑनलाइन फोरम के माध्यम से जोड़ता है। यह फोरम उपयोगकर्ताओं को अन्य लेखकों से प्रश्न पूछने, टेंप्लेट एक्सेस करने और कार्यशालाओं के लिए साइन अप करने की अनुमति देते हैं। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह शेफ हो या मैकेनिक, घर पर रहने वाले माता-पिता या शिक्षक, इसमें भाग ले सकते हैं। *

पुस्तक प्रेमियों की सबसे पसंदीदा जगह होती है, पुस्तकालय, जहां जाकर वे मनचाही किताबें पढ़ते हैं। यहां हम आपको एक ऐसी लाइब्रेरी के बारे में बता रहे हैं, जो अपने पाठकों तक खुद पहुंचती है। जानिए, उत्तराखंड की अनोखी घोड़ा लाइब्रेरी के बारे में।

दूर-दराज तक किताबें पहुंचाती घोड़ा लाइब्रेरी

अनोखी पहल
डॉ. दीपक कोहली

घोड़ा लाइब्रेरी से अपनी मनपसंद किताबें चुनते युवा पाठक

लाइब्रेरी, यानी पुस्तकालय। एक ऐसी जगह, जहां ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला, दर्शन आदि अनेक विषयों से संबंधित पुस्तकों को सहेजकर रखा जाता है। वैसे तो दुनिया में एक से बढ़कर एक पुस्तकालय हैं। लेकिन आज हम आपको एक ऐसे चलते-फिरते पुस्तकालय के बारे में बता रहे हैं, जो अपने अनूठेपन के कारण पुस्तक प्रेमियों के बीच बहुत चर्चित है।

कहां है घोड़ा लाइब्रेरी: उत्तराखंड के नैनीताल की 'घोड़ा लाइब्रेरी' अपने अनूठे शिक्षा अभियान विस्तार कार्यक्रम के लिए लोगों के बीच चर्चित हो रही है। वैसे तो यह मुख्य रूप से बच्चों के लिए शुरू की गई लाइब्रेरी है, लेकिन अपने अनोखेपन के कारण बड़ों के बीच भी कौतुक का विषय बना हुआ है। बच्चों के साथ-साथ बड़े भी इस लाइब्रेरी का लाभ उठाते हैं।

ऐसे नाम पड़ा: इस पुस्तकालय का नाम घोड़ा लाइब्रेरी इसलिए पड़ा क्योंकि एक घोड़ा अपनी पीठ पर किताबों की गठरी लेकर नैनीताल के कई गांवों में घूमता रहता है। घोड़ों के जरिए सड़क से दूर बसे दुर्गम गांवों के बच्चों के लिए किताबें पहुंचाई जा रही हैं। इनमें कोर्स की किताबों के साथ मनोरंजक और ज्ञानवर्धक साहित्य एवं पत्रिकाएं भी शामिल होती हैं।

ऐसे हुई शुरुआत: उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में दूरदराज के हिस्सों में, जहां सामान्य जीवन की जरूरतों को पूरा करना कठिन है। ऐसे में स्कूली बच्चों तो उनकी जरूरत की किताबें मुहैया कराना बेहद मुश्किल होता है। साथ ही पत्रिकाएं और साहित्य पढ़ने में रुचि रखने वाले लोगों के लिए भी पत्र-पत्रिकाएं आमतौर पर उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। ऐसे में उत्तराखंड के सुदूरवर्ती गांवों के बच्चों और बड़ों तक कोर्स की किताबों के साथ-साथ विभिन्न विषयों की किताबें और पत्र-पत्रिकाओं की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय निवासी शुभम बधानी के दिमाग में इस अनोखी लाइब्रेरी को शुरू करने का आइडिया आया। बधानी का कहना है कि इस प्रोजेक्ट के तहत पहले उन गांवों को चुना गया, जो मुख्य सड़क से दूर स्थित हैं। जहां पहुंचने के लिए पहाड़ी नालों और झरनों को पैदल पार करना पड़ता है। तय किया गया कि इन गांवों में घोड़ों पर रखकर किताबें पहुंचाई जाएं।

कैसे काम करती है लाइब्रेरी: इस लाइब्रेरी के संचालन के बारे में शुभम बधानी बताते हैं कि वे गांव के शिक्षकों और स्वयंसेवकों के साथ बच्चों से मिलकर पहले उनकी रुचि समझते हैं और उसी के अनुसार किताबें लेकर आते हैं। घोड़ा लाइब्रेरी का घोड़ा कई गांवों में उन लोगों के लिए रुकता है, जो पढ़ने के इच्छुक हैं। साप्ताहिक ट्रिप के माध्यम से एक ट्रिप में बच्चों को किताबें भेजी जाती हैं और अगले ट्रिप में दी गई किताबें वापस ले ली जाती हैं और नई किताबें उन्हें उपलब्ध कराई जाती हैं।

सुदूरवर्ती गांवों तक है पहुंच: आज उत्तराखंड के नैनीताल में सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में इस लाइब्रेरी का भरपूर लाभ उठाया जा रहा है। हर वर्ग के छात्र और उनके अभिभावक भी इस अद्वितीय पोर्टेबल लाइब्रेरी का उपयोग कर रहे हैं। गांवों में बच्चों को अब पुस्तकें और अन्य अध्ययन सामग्री मिलने लगी हैं।

मिसाल है यह प्रयास: शहरी क्षेत्रों की बात करें, तो वहां लोगों को अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए तमाम साधन उपलब्ध होते हैं, जैसे- टीवी, विशाल पुस्तकालय, कार्यशालाएं, प्रशिक्षण संस्थान इत्यादि। इनके माध्यम से शहरी निवासियों को तमाम जानकारी आसानी से मिल जाती हैं। लेकिन सुदूरवर्ती ग्रामीण इलाकों में रहने वाले बच्चों और बड़ों के लिए इन सुविधाओं की उपलब्धता मुश्किल है। अभी भी सैकड़ों दूर-दराज के गांव ऐसे हैं, जो इंटरनेट से नहीं जुड़े हैं। अभी भी लाखों बच्चे हैं, जो बाहरी दुनिया के बारे में जानने के लिए उत्सुक हैं। ऐसे में उत्तराखंड के सुदूरवर्ती गांव के लोगों के हाथ में अच्छी किताबों का आना, किताबें पढ़ने का मौका मिलना एक सपने के सच होने जैसा है।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार और पढ़ने की आदत विकसित करने की दिशा में शुभम बधानी की 'घोड़ा लाइब्रेरी' अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी है। बच्चों के माता-पिता और अन्य ग्रामीणों की भागीदारी की वजह से यह अभियान दिनों-दिन सफल हो रहा है। *

सक्सेस मंत्रा
अंजू जैन

दुनिया के सफलतम लोगों की जीवनयात्रा पर निगाह डालें तो पाएंगे कि उन सभी में अपने काम के प्रति भरपूर प्यार रहा है। सफलता पाने के लिए लगन और समर्पण कितना मायने रखता है, आप जरूर जानना चाहेंगे।

काम से करें प्यार तो सफलता मिले अपार

कई बार मन में सवाल उठता है कि दुनिया में कुछ ही लोग इतने सफल, चर्चित और समृद्ध क्यों होते हैं, जबकि ज्यादातर लोग एक औसत और गुमनाम सा जीवन जीते हैं? इसकी कई वजहें होती हैं, इनमें से कुछ के बारे में यहां जानते हैं।

कर्म को मानते हैं पूजा

वैसे तो दुनिया में लगभग सभी लोग अपनी आजीविका के लिए या नाम कमाने के लिए कुछ न कुछ काम करते हैं। लेकिन कुछ लोग ज्यादातर लोगों से बहुत आगे निकलकर अपने क्षेत्र में, कुछ अपने जिले या राज्य में और कुछ लोग इससे भी आगे बढ़कर देश और दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बना लेते हैं। उनके पास नाम, शोहरत, पैसा, सफलता सब कुछ होता है। जानते हैं क्यों? क्योंकि ये उन ज्यादातर लोगों में से नहीं होते, जो बेमन या मजबूरी में अपने काम को करते हैं। ये उन चंद लोगों में से होते हैं, जो अपने काम में पूरी तन्मयता से डूबे रहते हैं। दिन-रात उल्लास और उमंग से मेहनत करते हैं और धैर्यपूर्वक अच्छे नतीजे का इंतजार करते हैं। ऐसे लोगों का जीवनमंत्र होता है- कर्म ही पूजा है।

अपने काम से करें प्यार

आज के समय में सुनीता विलियम्स जैसी अंतरिक्ष यात्री हों या विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे खिलाड़ी, अंबानी, टाटा और अडानी जैसे उद्योगपति हों या अमिताभ बच्चन, शाहरुख जैसे एक्टर, इन्हें कौन नहीं जानता! ऐसे कई सारे लोग दुनिया में हैं, जो विश्वविख्यात हैं और सफलता के चरम पर हैं। हर कोई जानता है कि उनकी जिंदगी, काम और राह आसान कभी नहीं थी। इन्होंने अपने जीवन में अभूतपूर्व कठिन और जटिल परिस्थितियों का सामना किया। हार-जीत और आशा-निराशा के भंवर से न जाने कितनी बार जूझे हैं।

कई बार इन्होंने खुद को उल्लास, उमंग, प्रशंसा और सफलता के शिखर पर महसूस किया और कई बार ऐसा भी महसूस किया कि मानो सब कुछ समाप्त हो चुका है और वे इतने नीचे जा चुके हैं कि आगे कुछ भी नहीं बचा। लेकिन इन्होंने कभी यह नहीं कहा कि मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता या काम में मेरा मन नहीं लगता। जानते हैं क्यों? क्योंकि इन्होंने अपने काम से जी भर कर प्यार किया, उसे ही अपना सब कुछ समझा और हमेशा धैर्य बनाए रखा। इसलिए आज सफल और महान लोगों की सूची में इनका नाम है। हाल ही अंतरिक्ष में करीब 9 महीने तक विषम परिस्थितियों में रहकर लौटी सुनीता विलियम्स ने कहा है, 'अगर आप मन लगाएं, दृढ़ संकल्प रखें और कोई रास्ता खोजें तो आप जो करना चाहें कर सकते हैं। आप कभी खुद को किसी चीज में जकड़ा हुआ महसूस ना करें। कुछ ऐसा खोजें जो आपको पसंद है। जैसे ही वह मिल जाए, आप उसे पूरे मन से अच्छी तरह करें, बस यही महत्वपूर्ण है।'

सकारात्मक दृष्टिकोण है जरूरी

सफलता और सुकून सकारात्मकता से ही मिलते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति अगर सफलता के शिखर पर हैं और समस्याओं का बेहतर तरीके से समाधान कर पाते हैं तो यह कोई जादू नहीं है बल्कि सीधा सरल विज्ञान है। इसका संबंध हमारे मस्तिष्क की क्षमताओं और इमोशनल इंटेलिजेंस से है। यह नतीजा 30 वर्षों के शोध से प्राप्त हुआ है, जो नॉर्थ कैरोलिना की पॉजिटिव इमोशंस लैबोरेट्री की प्रोफेसर बारबरा फ्रेडरिक के नेतृत्व में हुआ है। ब्रेन न्यूरॉन्स की आवाजाही पर आधारित अध्ययन बताते हैं कि सकारात्मक लोगों के मस्तिष्क का वेंट्रल टैगमैंटल एरिया अधिक सक्रिय होता है, जो उन्हें आशावादी बनाता है। सकारात्मक लोगों के ब्रेन के सर्किट्स उन्हें नए विचारों के लिए खुला बनाते हैं। हमारा सामाजिक व्यवहार कैसा होगा से लेकर हम समस्याओं को कैसे सुलझाते हैं, यह सब ब्रेन सर्किट से ही तय होता है। अपने मस्तिष्क को सकारात्मकता के लिए अधिक सक्षम बनाने के लिए निरंतर सकारात्मक दृष्टिकोण वाली भाषा का इस्तेमाल करना, चीजों के उजले पहलुओं को देखना और ऐसे सवाल पूछना जरूरी है, जो किसी भी परिस्थिति में सर्वश्रेष्ठ हल खोज कर उन्हें बेहतर बनाने पर केंद्रित हों। किसी ने बिल्कुल सही कहा है, परिस्थिति से सोच नहीं बनती बल्कि सोच से परिस्थिति बनती है।

मेहनत के साथ समर्पण जरूरी

जिन लोगों ने इस दुनिया में सफलता, नाम, दौलत और शोहरत पाई है, उन्होंने अपने काम को जी-जान से चाहा है। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान हों या अल्बर्ट आइंस्टीन, रतन टाटा हों या स्टीव जॉब्स, ये सभी अपने काम के प्रति पूर्ण समर्पित थे। ये सभी अपने काम को जुनून की हद तक चाहते थे। आपको यह मान कर चलना चाहिए कि आपकी प्रतिभा और आपका जीवन ईश्वर का अनमोल उपहार है। परफेक्शन और अच्छा नतीजा निरंतर एक्शन और समर्पण से ही आता है। अपना काम कीजिए और बाकी ईश्वर पर छोड़ दीजिए। यही महान धर्म ग्रंथ 'गीता' में भी कहा गया है। *

बड़ा पर्दा
हेमंत पाल

भक्ति के अनेक तरीकों में से एक है भक्ति गीतों यानी भजन के माध्यम से ईश्वर को याद करना। अनेक हिंदी फिल्मों में फिल्माए गए भक्ति गीतों को लोग आज भी नहीं भूल पाए हैं। घरों और मंदिरों में ये गीत श्रद्धा-भक्ति के साथ सुने-सुनाए जाते हैं। भक्ति गीतों से सजी ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

भक्ति-गीतों से सजी यादगार हिंदी फिल्में

आज भी लोकप्रिय है फिल्म 'सुहाग' का भक्ति गीत

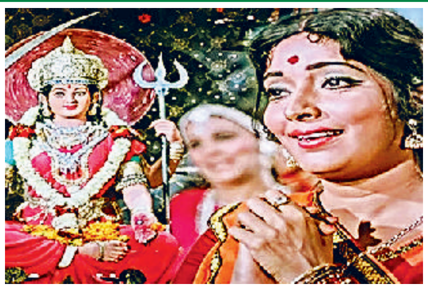
दर्शकों को खूब पसंद आई फिल्म 'जय संतोषी मां'

भगवान की भक्ति के लिए गीत या भजन गाना और सुनना बहुत लोकप्रिय है। फिल्मों में अकसर दिखाया जाता है कि किस तरह एक भजन सारे बुरे हालात बदल देता है। खास बात यह भी कि धार्मिक फिल्मों में ही भक्ति गीत हों, यह जरूरी नहीं। कई मल्टीस्टार एक्शन और रोमांटिक फिल्मों में भी ऐसे कई भक्ति गीत फिल्माए गए, जो लोकप्रिय हुए और आज भी इन्हें सुना जाता है।

शुरुआती दौर से जारी है सिलसिला: फिल्म इतिहास के पन्ने पलटे जाएं, तो हम पाते हैं कि ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों के जमाने से ही भक्ति गीतों को फिल्मों में शामिल किया जाता रहा है। उस दौर की कुछ फिल्मों के भक्ति गीत और भजन आज भी इतने लोकप्रिय हैं कि तीज-त्योहार पर ये बजते सुनाई देते हैं। फिल्मों ने ऐसे कई भजन और भक्ति गीत दिए हैं, जिन्हें सुनकर और गाकर कुछ पलों के लिए हम अपने दुःख भूल जाते हैं। ऐसी स्थिति में मन में विश्वास की एक ज्योति जल उठती है।

भरपूर सफल हुई 'जय संतोषी मां': धार्मिक फिल्मों और उसके प्रसिद्ध भक्ति गीतों की बात करें, तो 'जय संतोषी मां' को एक मिसाल के तौर पर देखा जा सकता है। 1975 में आई कम बजट की फिल्म 'जय संतोषी मां' को अपार सफलता मिली थी। इस फिल्म की गिनती अब तक की श्रेष्ठ ब्लॉकबस्टर फिल्मों में होती है। फिल्म की अपार सफलता में इस फिल्म के सभी गीतों का भी बड़ा योगदान था। उषा मंगेशकर, महेंद्र कपूर और मन्ना डे ने कवि प्रदीप के लिखे भक्ति गीत गाए थे। 'करती हूं तुम्हारा व्रत मैं स्वीकार करो मां', 'यहां-वहां जहां-तहां मत पूछो कहां-कहां', 'मैं तो आरती उतारूं रे', 'मदद करो संतोषी माता', 'जय संतोषी मां', 'मत रो मत रो आज राधिके', फिल्म के सभी गीत उन दिनों तो खूब प्रचलित हुए ही, आज भी सुने जाते हैं। लोगों में इस फिल्म एवं इसके कलाकारों के प्रति भक्ति-भाव का ये आलम था कि फिल्म में माता संतोषी का किरदार निभाने वाली एक्ट्रेस अनीता गुहा को लोग पूजने लगे थे। 'जय संतोषी मां' में अभिनय करने वाले महिपाल ने भी अपने जीवन काल में 'संपूर्ण रामायण', 'वीर भीमसेन', 'वीर हनुमान', 'हनुमान पाताल विजय', जैसी सफल धार्मिक फिल्मों में काम किया। उन्होंने अपने करियर में भगवान राम, कृष्ण, गणेश और विष्णु का किरदार इतनी बार निभाया कि असल जिंदगी में भी लोग इन्हें पूजने लगे थे।

'सुहाग' का यादगार भक्ति गीत: 1979 में अमिताभ बच्चन और शशि कपूर की फिल्म 'सुहाग' आई थी, जिसमें मां दुर्गा की भक्ति पर गाया गया भजन 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा नाम ओ शेरोवाली' काफी लोकप्रिय हुआ था। फिल्म के इस भक्ति-गीत में अमिताभ और रेखा ने गरबा भी किया था। आशा भोसले और मोहम्मद रफी की आवाज ने इस गीत को यादगार बना दिया। आज भी नवरात्र और देवी पूजन के अन्य अवसरों पर यह गीत सुनाई देता है।

लंबी है फेहरिस्त: शुरुआत से लेकर अब तक की हिंदी फिल्मों की बात करें, तो भक्ति गीतों से सजी हिंदी फिल्मों की लंबी फेहरिस्त है। याद किया जाए तो ऐसे कालजयी भक्ति गीतों में 1965 में आई फिल्म 'खानदान' के गीत 'बड़ी देर भई नंदलाला तेरी राह तके बृजबाला' को रखा जा सकता है। इस भजन को सुनील दत्त पर फिल्माया गया था। राजेंद्र कृष्ण के लिखे इस भजन को मोहम्मद रफी ने गाया था। जन्माष्टमी के अवसर पर अभी भी ये गीत गूंजता है। उससे पहले 1952 में आई फिल्म 'बैजू बावरा' का गीत मोहम्मद रफी की हिंदू भजनों के प्रति लगाव का सबसे बेहतर प्रमाण कहा जा सकता है। 'ओ दुनिया के रखवाले, सुन दर्द भरे मेरे नाले' के बोल आज भी किसी दुखी व्यक्ति का चेहरा सामने ले आते हैं। शकील बदायूंनी के लिखे इस गीत में नौशाद ने संगीत दिया था। 1954 में आई फिल्म 'तुलसीदास' के गीत 'मुझे अपनी शरण में ले लो राम' को भी मोहम्मद रफी ने अपनी आवाज दी और बीते जमाने के विख्यात संगीतकार चित्रगुप्त ने इसे संगीत से सजाया था। गीत में राम को आराध्य मानकर अपना सब कुछ अर्पण करने की बात कही गई है।

ये तो बस कुछ उदाहरण मात्र हैं। ऐसे कितने ही भक्ति गीत हैं, जिसने फिल्म की सफलता में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका तो निभाई ही, आस्थावान दर्शकों एवं भक्तों के हृदय में भक्ति-भाव को भी प्रबल किया। *